संचेतना समाहित

नवसंचेतना

वर्ष 24 अंक 2

अक्टूबर 2022 से मार्च 2023

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान
नई दिल्ली

हिन्दी माह आयोजन

संचेतना समाहित

नवसंचेतना

वर्ष 24 अंक 2 अक्टूबर 2022 से मार्च 2023

सीएसआईआर-निस्पर

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान
नई दिल्ली

सीएसआईआर

CSIR

भारत का नवाचार इंजन

The Innovation Engine of India

नवसंचेतना

राजभाषा पत्रिका

वर्ष 24 अंक 2

प्रमुख सम्पादक
रंजना अग्रवाल
प्रबन्ध सम्पादक
हसन जावेद खाँ
सम्पादक
मीनाक्षी गौड़
सह-सम्पादक
वीरपाल सिंह
प्रोडक्शन एवं प्रिंटिंग
अश्वनी कुमार ब्राह्मी,
अरुण उनियाल
अनिल कुमार,
मोहम्मद शकील

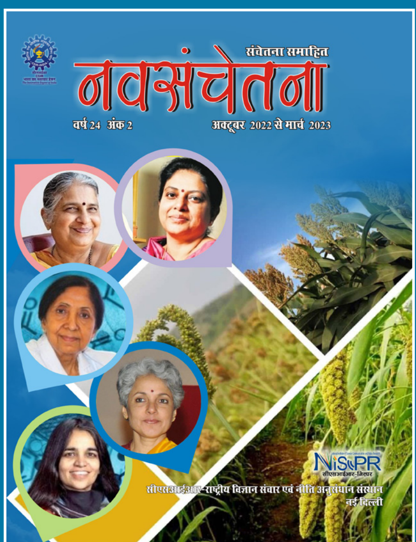

आवरण

सम्पादकीय

आजादी का अमृत काल द्योतक है नवीन संकल्पनाओं, नवीन विचारों को मूर्त रूप देने का। यह वह समय है जिसका उपयोग हमें अपने चहुंमुखी विकास को तीव्र करने और आम जन के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में भली-भांति करना चाहिए। साथ ही यह समय है आत्ममंथन करने का भी, यह जानने का, कि अब तक क्या प्राप्त किया जा चुका है और जीवन की इस अनन्त यात्रा में अभी क्या शेष है और क्या किये जाने की आवश्यकता है। इस प्रगति, विकास में महिलाओं की भागीदारी भी विशेष महत्व रखती है। आज महिलाएं आगे बढ़ रही हैं और अपने पुरुष सहयोगियों के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम कर रही हैं, अब महिलाएं उन क्षेत्रों में भी अपने पैर जमा रही हैं जहां अभी तक मात्र पुरूषों का ही वर्चस्व रहा है। कामकाजी महिलाओं की स्थिति का जायजा लेते हुए महिला दिवस के अवसर को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित में महिलाओं की स्थिति पर सीएसआईआर के सर्वेक्षण की एक रिपोर्ट समाहित की गई है जो सीएसआईआर में महिला वैज्ञानिकों तथा तकनीकी कार्मिकों के अनुभव तथा उनके कार्यालयी जीवन में सन्तुलन बनाए रखने में उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों के सन्दर्भ में विश्लेषण पर आधारित है। साथ ही संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस वर्ष को अन्तरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 घोषित किया गया है जिसके अन्तर्गत भारत सरकार ने भारत में भी कई कार्यक्रम आरम्भ किए हैं। मोटे अनाज की महत्ता, विशेषताओं से सम्बन्धित संकलन भी आपकी जानकारी हेतु पत्रिका में सम्मिलित किया गया है।

रिपोर्ट भाग में संस्थान द्वारा भारत अन्तरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के आठवें संस्करण के अन्तर्गत आयोजित *''विज्ञानिका''* कार्यक्रम के सफल आयोजन की रिपोर्ट भी शामिल की गयी है जो विभिन्न विधाओं द्वारा निस्पर की विज्ञान लोकप्रियकरण के प्रति वचनबद्धता को प्रतिबिम्बित करती है।

आशा है नवसंचेतना का यह अंक आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित

रंजना

रंजना अग्रवाल

uolapruk v/kokf"kd :i ls lh,lvkbZvkj&jk"Vªh; foKku lapkj ,oa uhfr vuqla/kku laLFkku]
Mk- d`-,l- Ñ".ku ekxZ] ubZ fnYyh & 110 012 ls izdkf'kr gksrh gSA i=dk esa izdkf'kr ys[kksa esa ys[kdksa ds vius fopkj gSA
laLFkku] ys[kdksa ds dFkuksa vkj erksa ds fy, mÙkjnk;h ugha gSA

फोन : 25848702, 25846301/361, 371
फैक्सः 25847062
ई-मेल : director@niscpr.res.in
meenakshigaur@niscpr.res.in

lh,lvkbZvkj&jk"Vªh; foKku lapkj ,oa uhfr vuqla/kku laLFkku] ubZ fnYyh

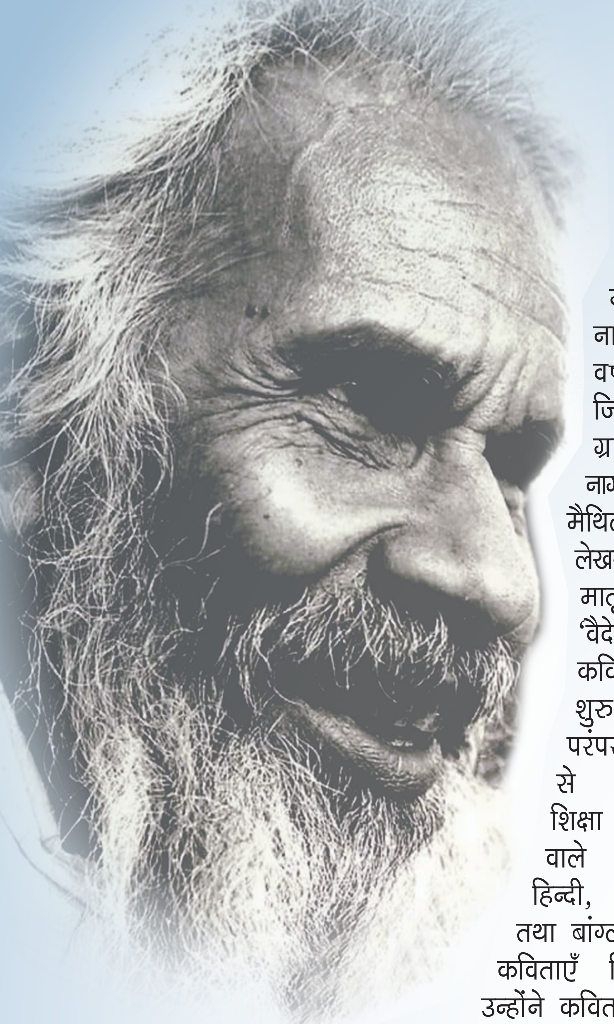

वैद्यनाथ मिश्र जी

नागार्जुन

प्रगतिवाद के गौरवपूर्ण स्तंभ नागार्जुन का जन्म वर्ष 1911 में दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में हुआ था। नागार्जुन हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। मातृभाषा मैथिली में 'वैदेह' उपनाम से कविता लेखन की शुरुआत की। परंपरागत प्राचीन पद्धति से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने वाले बाबा नागार्जुन हिन्दी, मैथिली, संस्कृत तथा बांग्ला भाषा में अपनी कविताएँ लिखा करते थे। उन्होंने कविताओं के साथ-साथ उपन्यास और अन्य विधाओं का लेखन वर्णन भी किया। वे घुमंतू स्वभाव के थे। श्रीलंका में बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और नाम बदलकर ***'नागार्जुन'*** कर लिया। यहीं बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया और कामचलाऊ अँग्रेजी और पालि भाषा सीखी। 1938 में भारत लौटे तो किसान आंदोलन में भागीदारी की, तीन बार जेल गए। आठ-आठ पृष्ठों की मैथिली काव्य पुस्तिका तैयार कर ट्रेन में बेची। मैथिली उन्हें ***'यात्री'*** उपनाम से पहचानती है। वे शुरु से अपनी कविताओं को यात्री उपन्यास में लिखा करते थे। इनकी सारी कविताएं भारतीय जन-जीवन से जुड़ी हुईं हैं।

नागार्जुन ***'जनकवि'*** कहे जाते हैं। उनके काव्य की अंतर्वस्तु का दायरा वृहत है। सामंती व्यवस्था और सोच, जीवन की विसंगतियाँ और अंतर्विरोध, राजनीतिक व्यंग्य, निजी जीवन-प्रसंग, प्रकृति चित्रण जैसे तमाम विषय उनकी कविताओं में उतरे हैं। राजनीतिक और समकालीन संवाद की अपनी चर्चित कविताओं में उन्होंने व्यंग्य को हथियार की तरह इस्तेमाल किया है। नामवर सिंह उन्हें कबीर के बाद हिंदी का सबसे बड़ा व्यंग्यकार बताते हैं। उनके पास कविता कहने के हजार ढंग थे। उनकी भाषा भी अपना तेवर बदलती रहती है। सामाजिक विषमताओं शोषण और वर्ग-संघर्ष पर इनकी लेखनी निरंतर आग उगलती रही। अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होंने दलित, पीड़ित और शोषित वर्ग को अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा दी। अपने स्वतंत्र एवं निर्भीक विचारों के कारण इन्होंने हिंदी साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान बनाई।

नागार्जुन ने मैथिली, संस्कृत और हिंदी में काव्य रचना के अलावा उपन्यास, कहानी, निबंध भी लिखे हैं। उन्होंने अनुवाद विधा में भी योगदान किया है।

'सतरंगे पंखों वाली', 'प्यासी पथराई आँखें', 'तालाब की मछलियाँ', 'चंदना', 'तुमने कहा था', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'हजार-हजार बाहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'रत्न गर्भ', 'ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!!', 'आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने', 'इस गुब्बारे की छाया में', 'भूल जाओ पुराने सपने', 'अपने खेत में' उनके हिंदी काव्य-संग्रह हैं। उन्होंने 'भस्मांकुर' नामक खंड-काव्य भी लिखा है। मैथिली में 'चित्रा' और 'पत्रहीन नग्न गाछ' कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनकी कहानियाँ 'आसमान में चंदा तेरे' में संकलित हैं जबकि निबंधों का संकलन 'अन्नहीनम' और 'क्रियाहीनम' में किया गया है। 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'वरुण के बेटे', 'बाबा बटेसर नाथ', 'दुखमोचन', 'इमरितिया', 'उग्रतारा', 'जमनिया के बाबा', 'कुंभीपाक', 'अभिनंदन', 'नई पौध' और 'पारो' उनके उपन्यास हैं। उन्होंने मेघदूत, गीत गोविंद और विद्यापति की पदावली का हिंदी अनुवाद किया है।

उन्हें 1969 में ***'पत्रहीन नग्न गाछ'*** (मैथिली) के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सही अर्थों में कवि नागार्जुन भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं। ये प्रगतिवादी युग के कवि हैं। जन संघर्ष में अडिग आस्था, जनता से गहरा लगाव और एक न्यायपूर्ण समाज का सपना, ये तीन गुण नागार्जुन के व्यक्तित्व में ही नहीं, उनके साहित्य में भी घुले-मिले हैं। निराला के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इतने छंद, इतने ढंग, इतनी शैलियाँ और इतने काव्य रूपों का इस्तेमाल किया है। पारंपरिक काव्य रूपों को नए कथ्य के साथ इस्तेमाल करने और नए काव्य कौशलों को संभव करने वाले वे अद्वितीय कवि हैं। नागार्जुन ने कविताओं के जरिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं। वे एक कवि के रूप में ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु नए भारत के निर्माता के रूप में दिखाई देते हैं।

खिचड़ी विप्लव देखा हमने, भोगा हमनें क्रांति विलास
अब भी खत्म नहीं होगा क्या, पूर्णक्रांति का भ्रांति विलास।

जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ?
जनकवि हूँ मैं, साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ।

मीनाक्षी गौड़
सम्पादक

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

National Institute of Science Communication and Policy Research
NIScPR
सीएसआईआर–निस्पर

नवसंचेतना

राजभाषा पत्रिका

वर्ष 24 अंक 2

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर)
विज्ञान संचार भवन, डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012
विज्ञान सूचना भवन, 14, सत्संग विहार मार्ग, नई दिल्ली-110067

पृ. 01

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (STEM) में महिलाओं की स्थिति : सीएसआईआर का सर्वेक्षण

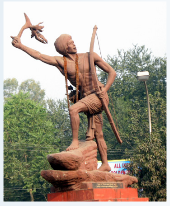

पृ. 10

महान है बिरसा और महान उनका योगदान : प्रांजल धर

पृ. 15

अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 एक जानकारी : मीनाक्षी गौड़

पृ. 19

आधुनिक समय में स्वामी विवेकानंद की युवा प्रतीक के रूप में प्रासंगिकता : कविता वर्मा

कविताएं

पृ. 22

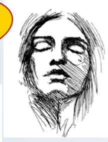
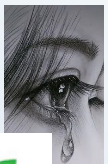

कहानी

पृ. 30

रिपोर्ट

पृ. 33

सीएसआईआर-निस्पर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'

आयुष मंत्रालय और सीएसआईआर-निस्पर ने आयुर्वेद @2047 पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया

सीएसआईआर-निस्पर में हिंदी माह 2022 का आयोजन

सीएसआईआर-निस्पर ने छात्र-वैज्ञानिक कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन किया

सीएसआईआर-निस्पर ने फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 का आयोजन किया

सीएसआईआर-निस्पर ने अपना दूसरा स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-निस्पर ने 22 भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार पर चर्चा करने के लिए राष्ट्रीय विचार-मंथन बैठक का आयोजन किया

8 वें आईआईएसएफ में विज्ञानिका का सफल अयोजन

कृपया ध्यान दें

राजभाषा निर्देशिका

1. निम्नलिखित पत्रों का प्रारूप केवल हिन्दी में प्रस्तुत करें
   1. क तथा ख क्षेत्र की राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन और इन क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि और गैर सरकारी व्यक्तियों को जाने वाले सभी पत्रादि
   2. हिन्दी में प्राप्त सभी पत्र आदि के उत्तर।
   3. किसी कर्मचारी द्वारा हिन्दी में दिए गए या हस्ताक्षर किए गए आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर।
   4. संबंधित पत्रावलियों पर टिप्पणियां।

2. द्विभा"ी रूप अर्थात् हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में जारी किये जाने वाले कागजात
   1. संकल्प (Resolution) 2. अधिसूचना (Notifications) 3. सामान्य आदेश (General Orders) 4. नियम (Rules) 5. प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट 6. प्रैस विज्ञप्तियां (Press Release) 7. संविदाएं (Contracts) 8. एग्रीमैंटस (Agreements) 9. परमिट

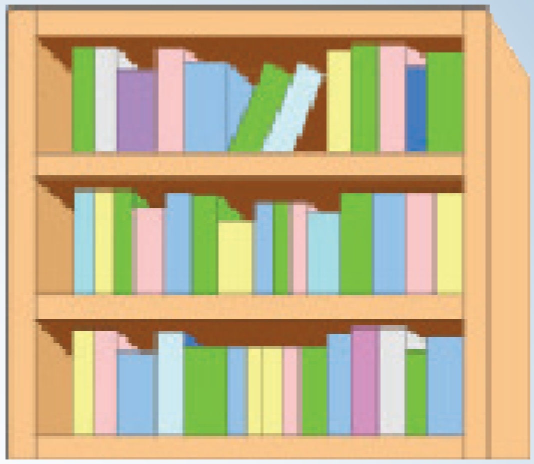

(Permits) 10. लाइसैंस (Licence) 11. टेंडर नोटिस (Tender Notice) 12. टेंडर फार्म (Forms of Tender) 13. संसद के एक सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टे और सभी सरकारी कागजात।

(सामान्य आदेशों में सभी प्रकार के आदेश, विभागीय प्रयोग वाले या स्थाई किस्म के निर्णय, कर्मचारियों के लिए सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, विभागीय प्रयोग या सरकारी कर्मचारियों के लिए सभी परिपत्र शामिल हैं)

3. हिन्दी में लिखे या हस्ताक्षर किए सभी पत्रों, आवेदनों, अपीलों या अभ्यावेदनों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाएं।

4. उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, दिल्ली और संघ शासित राज्य अण्डमान निकोबार द्वीप समूह तथा महारा"ट्र, गुजरात, पंजाब और संघ राज्य क्षेत्र चण्डीगढ़ में स्थित किसी कार्यालय या व्यक्ति द्वारा भेजे जाने वाले और उन्हें सम्बोधित मूल पत्र हिन्दी में ही भेजे जाएं।

5. उपर्युक्त सूची में शामिल राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को छोड़कर अन्य राज्यों और संघ राज्य स्थित केवल केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को हिन्दी में पत्र भेजे जा सकते हैं।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (STEM) में महिलाओं की स्थिति : सीएसआईआर का सर्वेक्षण

अध्ययन की पृष्ठभूमि

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित जैसे शैक्षणिक विषयों को एक साथ लेकर स्टैम (STEM) व्यापक शब्द का विकास किया गया। यह लेख उस रिपोर्ट पर आधारित है जिसका उद्देश्य, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की प्रयोगशालाओं में काम करने वाली महिला वैज्ञानिकों तथा तकनीकी कार्मिकों के अनुभवों और उनके कार्य–जीवन में संतुलन बनाए रखने में सामने आने वाली कठिनाइयों के संदर्भ में विश्लेषण करना है।

इस सर्वेक्षण के परिणाम के आधार पर महिलाओं को प्रोत्साहित करने और सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं में लैंगिक संवेदनशील और गुणवत्तापूर्ण कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए कुछ संस्तुतियां प्रस्तावित की गई हैं। इस लेख में अध्ययन के परिणामों और सिफारिशों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

भारत सरकार की महिला बजट (जेंडर बजटिंग) योजना के अनुसार, सीएसआईआर और अन्य वैज्ञानिक संस्थानों को, महिलाओं के अनुकूल नीतियों को शामिल करने और विज्ञान को महिलाओं के लिए एक सार्थक करिअर विकल्प बनाने की आवश्यकता है। इसके द्वारा सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं में वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन, स्टैम में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं और चुनौतियों के संदर्भ में किया जाता है, ताकि सही दिशा में सुधार किया जा सके।

सीएसआईआर के महानिदेशक वर्तमान नीतियों को

WOMEN IN STEM:
A CSIR SURVEY TOWARD GENDER PARITY

Ranjana Aggarwal
Sandya Wakdikar
Praveen Sharma

सशक्त बनाने और नई नीतियां बनाकर कार्यस्थल में लैंगिक समानता लाने की आवश्यकता पर जोर देते रहे हैं। सीएसआईआर में जेंडर बजटिंग को बढ़ावा देने के लिए, जेंडर ऑडिटिंग सुनिश्चित करना और महिलाओं के अनुकूल नीतियों को शामिल करने में मदद करने के लिए कमियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है।

भारत की महिला स्टैम स्नातकों का विश्व में उच्चतम प्रतिशत (लगभग 40%) है, लेकिन देश में स्टैम की नौकरियों में उनका हिस्सा 14% है, जो बहुत कम है तथा इसमें सुधार की आवश्यकता है। स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट अध्ययन में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व को

भी शीघ्रता से सुधारने की आवश्यकता है। भारत में लिंग संतुलन की समस्या का, विशेषकर आर्थिक संसाधनों और जीवन के अवसरों के स्तर पर तत्काल समाधान आवश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र 2020 के अनुसार, ''भारत में उच्च अध्ययन के लिए विज्ञान में प्रवेश लेने वाली लड़कियों में वृद्धि देखी गई है, लेकिन कार्यस्थल में प्रवेश करने वाली महिलाओं की संख्या समान अनुपात में नहीं है''। यद्यपि, यह एक वैश्विक समस्या होने के बावजूद, भारत विरोधाभासी बना हुआ है, यहां स्नातक हैं लेकिन शोधकर्ता नहीं हैं। न केवल स्टैम में बल्कि सभी क्षेत्रों और उद्योगों में लैंगिक समानता प्राप्त करने से पहले भारत को एक लंबा रास्ता तय करना है। विश्व आर्थिक मंच जेंडर असमानता रिपोर्ट 2020 (WEF Gender Gap Report 2020) के अनुसार, विश्व स्तर पर कार्यशक्ति में प्रचलित लैंगिक अंतर को समाप्त करने में 257 साल लगेंगे। ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स 2020 में भारत 112वें स्थान पर है।

विश्व आर्थिक मंच रिपोर्ट 2021 (WEF Report 2021) में ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स रैंकिंग में भारत 140वें स्थान पर है। भारत सरकार कई सार्वजनिक नीतियां और योजनाएं बनाकर इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए अथक प्रयास कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के 189 सदस्य देशों द्वारा वर्ष 1995 में चौथे विश्व महिला सम्मेलन में बीजिंग घोषणा और कार्रवाई के लिए मंच को अपनाने के साथ, कई देशों द्वारा अपनी सार्वजनिक नीति और कार्यक्रम प्राथमिकताओं को आकार देने के लिए 'लिंग मुख्यधारा' को अपनाया गया है। भारत में अशोक लाहिरी समिति की संस्तुातियों के साथ 2004 में महिला बजट लागू किया गया था। महिला और बाल विकास मंत्रालय जेंडर उत्तरदायी बजट के रणनीतिक प्रबंधन और कार्यान्वयन की देखरेख करने वाला मुख्य विभाग रहा है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की रिपोर्ट के अनुसार कुल मिलाकर, महिलाएं दुनिया के शोधकर्ताओं के कम अनुपात में हैं। विज्ञान में महिलाओं पर राष्ट्रीय स्तर पर तुलनीय आंकड़ों की बढ़ती मांग के बावजूद, राष्ट्रीय आधार–सामग्री और नीति निर्माण में उनका उपयोग अक्सर सीमित रहता है। यूनेस्को की विज्ञान रिपोर्ट 2021 में पाया गया कि कंप्यूटिंग, डिजिटल सूचना प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित और भौतिकी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं का अभी भी कम प्रतिनिधित्व है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2018 में महिला शोधकर्ताओं का हिस्सा एक तिहाई (33%) था और कई देशों में जीव विज्ञान में संख्या के मामले में समानता प्राप्त की है। किंतु महिलाएं इंजीनियरिंग में केवल 28% महिला स्नातक और कंप्यूटर विज्ञान में 40% महिला स्नातक हैं। इस रिपोर्ट में भविष्य की नौकरियों के लिए विज्ञान में महिलाओं के कौशल को महत्व दिया गया है। यह देखा गया है कि भारत और कुछ विकसित देशों में, अत्यधिक प्रतिष्ठित संस्थानों और विश्वविद्यालयों में महिलाओं की उपस्थिति वर्तमान में भी नगण्य बनी हुई है।

सही अर्थों में विकास तब होता है जब निर्णय लेने वाले सभी प्रमुख निकायों में महिलाएं शामिल होती हैं। लैंगिक असंतुलन समावेशी विकास की राह में एक बड़ी बाधा है, जो केवल महिलाओं की समान भागीदारी से ही संभव है। आज महिलाएं स्टैम का अभिन्न अंग हैं। यद्यपि, इस क्षेत्र में पुरुषों के पूर्ण वर्चस्व के कारण महिलाओं को एक लंबा रास्ता तय करना शेष है। स्टैम में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करने के लिए क्षमता निर्माण को लक्ष्य करने वाली पर्याप्त कार्य नीतियों की तत्काल आवश्यकता है। वास्तविक रूप से लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए, स्टैम में उच्च पदों पर अधिक महिलाओं की आवश्यकता है। यद्यपि, यह तभी संभव होगा जब महिलाओं को अपने पुरुष समकक्षों के साथ स्टैम में शिक्षा, प्रशिक्षण और करिअर बनाने के समान अवसर मिलें।

सर्वेक्षण की रूपरेखा

सीएसआईआर और अन्य वैज्ञानिक संगठनों में जेंडर बजटिंग को बढ़ावा देने के लिए, जेंडर ऑडिट करना और उन असमानताओं की पहचान करना महत्वपूर्ण है जो स्टैम में जेंडर को मुख्य धारा में लाने के लिए महिलाओं के अनुकूल नीतियों को शामिल करने में सहायता कर सकते हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य स्टैम में महिलाओं, विशेष रूप से, सीएसआईआर की महिलाओं के लिए एक सर्वेक्षण–आधारित नीतिगत रूपरेखा प्रस्तुत करना है। संस्तुतियों पर पहुंचने के लिए इस अध्ययन में स्टैम में महिलाओं से संबंधित कुछ संकेतकों और विशेषताओं को ध्यान में रखा गया है। इस सर्वेक्षण में सीएसआईआर की महिलाओं के करिअर, उनकी स्टैम यात्रा, चुनौतियों, बाधाओं और प्रतिमानों पर आधारित तथा संबंधित जानकारी शामिल है।

यह अध्ययन दो प्रश्नावलियों पर आधारित है जिसकी आधार–सामग्री (डेटा) फरवरी 2021–जुलाई 2021 की अवधि में प्राप्त हुई थी। यह सर्वेक्षण उन क्षेत्रों की पहचान करने की दिशा में एक प्रयास है जिन पर कार्यस्थल पर लैंगिक समानता को शामिल करने के लिए सीएसआईआर को प्रयास करने की आवश्यकता है। इस प्रकार के सर्वे से स्टैम में महिलाओं के कार्यस्थलों के निर्माण की दिशा में अधिक प्रभावी नीति परिवर्तन तैयार करने में सहायता मिलने की उम्मीद है। यह रिपोर्ट समग्र दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए महिला वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों के साथ–साथ महिला छात्राओं के सर्वेक्षण पर आधारित है। निष्कर्षों के आधार पर नीतिगत संस्तुतियों का प्रस्ताव रखा गया है ताकि संगठनों को महिलाओं के अनुकूल कार्यस्थल बनाने में मदद मिल सके।

सीएसआईआर प्रणाली में प्रत्येक स्तर पर लिंग समानता की उपलब्धि के साथ, इस अध्ययन के माध्यम से सीएसआईआर के भीतर विभिन्न स्तरों पर काम करने वाली महिलाओं की वर्तमान स्थिति और नौकरी संबंधित समस्याओं की व्यवस्थित रूप से जांच करने का प्रयास किया गया है। यह सर्वेक्षण सीएसआईआर के महिला विज्ञान एवं तकनीकी कार्मिकों तथा वैज्ञानिक एवं नवाचारी अनुसंधान अकादमी (AcSIR) की महिला छात्रों के लिए किया गया है।

वर्तमान अध्ययन, महिलाओं के कार्य–जीवन संतुलन की जानकारी सहित, स्टैम में महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर केंद्रित है, साथ ही कार्य जीवन संतुलन की जानकारी, विचारों को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने में मदद कर सकता है। जेंडर ऑडिट की तकनीकों को लागू करने वाली लैंगिक समानता से संबंधित इन मापदंडों में से कुछ की गणना (i) सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के प्राथमिक सर्वेक्षण और (ii) अध्ययन को समृद्ध करने के लिए स्टैम में महिलाओं से सुझाव एकत्र किए गए हैं। महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता का एहसास कराने के लिए एक सुरक्षित और प्रोत्साहन देने वाले कार्यस्थल को प्राथमिकता देना, यौन उत्पीड़न के विरुद्ध समितियों के कामकाज, महिला विशिष्ट प्रोत्साहन के अलावा जैसे शिशु देखभाल सुविधाएं, फ्लैक्सी–घंटे, मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन आदि बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस अध्ययन में इन मापदंडों की जांच की गई है। इसके अतिरिक्त, अनुसंधान परियोजनाओं के आबंटन और एक निश्चित अवधि में महिला वैज्ञानिक और तकनीकी कार्मिकों को दिए गए धन का एक जेंडर ऑडिट किया गया है।

इस अध्ययन में कई कारकों और विशेषताओं को नियोजित किया गया है – जिससे महिला सशक्तिकरण और उनके कार्य–जीवन की गुणवत्ता को जोड़ा जा सकता है। जिस अध्ययन पर यह सर्वेक्षण आधारित है, वह कई संकेतकों से संबंधित सूचनाओं को संकलित करने के लिए किया गया है, जिसमें एक समय अवधि में की गई अनुसंधान परियोजनाएं, अनुसंधान आउटपुट, संस्थागत समितियों में भूमिका, कौशल उपयोग और अन्य कई सेवाओं में संतुष्टि का स्तर शामिल हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

- सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में एसीएसआईआर छात्रों सहित एस एंड टी कार्यबल में महिलाओं का लिंग लेखा परीक्षण करना।
- सीएसआईआर में एस एंड टी कार्यबल में महिलाओं द्वारा प्राप्त अनुसंधान अनुदानों का जेंडर ऑडिट करना।
- सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में अनुसंधान उत्पादकता, मान्यता के माध्यम से, उत्कृष्टता आदि के माध्यम से महिला कार्यबल की उपलब्धियों की रूपरेखा तैयार करना।
- लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण प्राप्त करने की दिशा में सीएसआईआर की पहल का मूल्यांकन करना, जैसे क्षमता निर्माण कार्यक्रम, लिंग केंद्रित कार्यक्रम और सुविधाएं।

- विभिन्न संकेतकों के माध्यम से सीएसआईआर में जेंडर संवेदीकरण की स्थिति को देखना।
- महिलाओं के लिए कार्य–अनुकूल वातावरण प्राप्त करने और कार्य–जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में आने वाली बाधाओं की पहचान करना।
- नीतिगत सिफारिशों को सूचीबद्ध करना और सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए एक रोडमैप का सुझाव देना।

उत्तरदाताओं की रूपरेखा

यह अध्ययन दो प्रश्नावलियों पर आधारित है जिसकी आधार–सामग्री फरवरी 2021–जुलाई 2021 की अवधि में संकलित की गई थी।

प्रथम प्रश्नावली का प्रयोगशाला स्तर पर जानकारी एकत्र करने के लिए उपयोग किया गया था। सीएसआईआर की 34 प्रयोगशालाओं ने भाग लिया और जानकारी में योगदान दिया। इनमें से 9 प्रयोगशालाएं प्रत्येक जैविक विज्ञान, रसायन विज्ञान, इंजीनियरी विज्ञान समूहों से थीं और 7 प्रयोगशालाएं संयुक्त रूप से भौतिक विज्ञान और सूचना विज्ञान समूहों से थीं ।

द्वितीय प्रश्नावली का उद्देश्य सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में एस एंड टी क्षेत्र में अलग–अलग महिलाओं से जानकारी एकत्र करना था। यह प्रश्नावली सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं के महिला वैज्ञानिक और तकनीकी अधिकारियों और AcSIRs छात्राओं (वर्तमान और पूर्व) पर आधारित थी। कुल 582 अनुक्रियाएं प्राप्त हुईं जिनमें 248 महिलाएं वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी तथा 334 महिलाएं अकादमी (AcSIR) छात्राएं थीं।

- महिला वैज्ञानिक और तकनीकी अधिकारियों में अधिकतर वरिष्ठ वैज्ञानिक शामिल थीं, जिसके बाद प्रमुख वैज्ञानिक थीं।
- लगभग 76% महिला एस एंड टी स्टाफ उत्तरदाताओं के पास डॉक्टरेट या पोस्टडॉक्टरल डिग्रियां हैं।
- अधिकतर महिला वैज्ञानिक और तकनीकी अधिकारी '35–50 वर्ष' आयु वर्ग में केंद्रित (59%) थीं। इसके बाद '50 वर्ष से अधिक' आयु वर्ग में थीं जो 22% हैं। अकादमी के लगभग 89% उत्तरदाता '35 वर्ष से कम' आयु वर्ग में थीं, शेष '35–50 वर्ष' आयु वर्ग में थीं।
- अधिकतर महिला वैज्ञानिक और तकनीकी स्टाफ अनुसंधान गतिविधियों में शामिल हैं, जिनमें से 12% अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यों के अलावा प्रबंधकीय या प्रशासनिक कार्य भी निष्पादित कर रही हैं।
- 87% महिला वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी विवाहित हैं जबकि अकादमी की 51% छात्राएं विवाहित हैं।

अवलोकन

- महानिदेशक–सीएसआईआर की स्थापना के बाद से सभी महानिदेशक (डी.जी.) पुरुष रहे हैं ।
- निदेशक–सर्वेक्षण के समय 34 प्रयोगशालाओं में से केवल 5 प्रयोगशालाओं का नेतृत्व महिला निदेशकों द्वारा किया जा रहा था। पिछले 20 वर्षो के दौरान, अधिकतर पुरुषों ने इन प्रयोगशालाओं का नेतृत्व किया है।

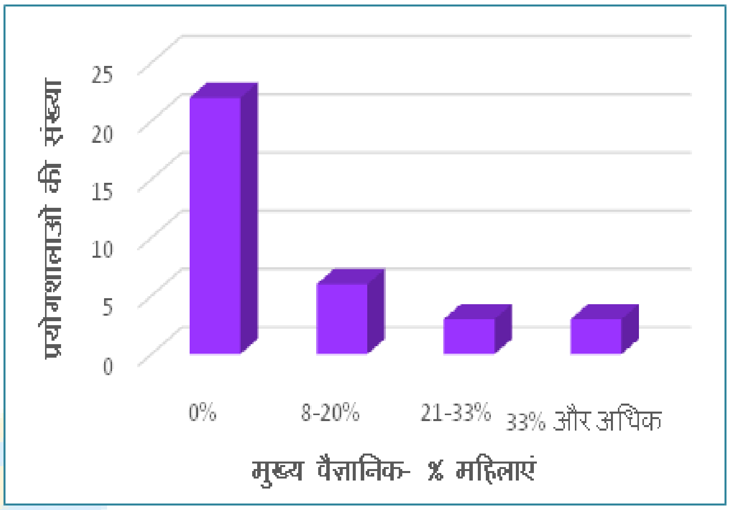

आकृति 1 : प्रयोगशालाओं में कुल मुख्य वैज्ञानिकों के रूप में महिला मुख्य वैज्ञानिक

- अध्ययन में शामिल किए गए सीएसआईआर की 22 प्रयोगशालाओं में मुख्य वैज्ञानिक (Chief Scientist) स्तर पर एक भी महिला नहीं है।
- अधिकतर संगठनों की विभिन्न संस्थागत समितियों

में महिलाओं का प्रतिनिधित्व असंतोषजनक है।

- 27% महिलाएं अनुसंधान समूह (research group) की प्रमुख रही हैं और लगभग 18% महिलाएं संस्था समितियों की प्रमुख रही हैं।
- सभी प्रयोगशालाओं में, सभी स्तरों पर महिला वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों की हिस्सेदारी बहुत कम पाई गई है।

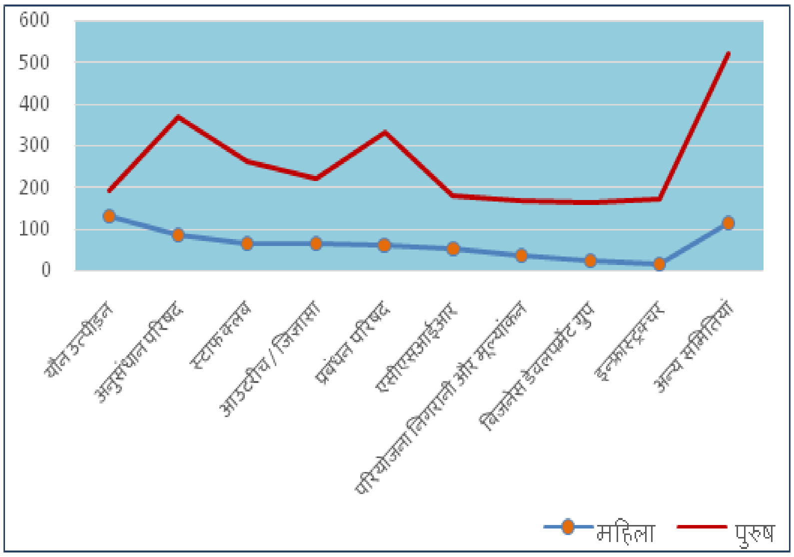

आकृति 2 : समितियों की सदस्यता

- अध्ययन में शामिल किए गए सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं के कुल वैज्ञानिकों में औसतन 18 महिलाएं और 15 तकनीकी कर्मचारी हैं।
- महिला उत्तरदाताओं ने 5 लाख रुपए से 22 करोड़ रुपए के बीच आंतरिक परियोजनाओं का नेतृत्व किया है, जबकि पिछले 10 वर्षों के दौरान उन्हें विभिन्न एजेंसियों से 2.72 लाख रुपए से 8.25 करोड़ रुपए की प्रायोजित परियोजनाएं प्राप्त हुई हैं। इन परियोजनाओं के लिए मुख्य प्रायोजक एजेंसियां, डीएसटी, डीबीटी और कुछ औद्योगिक इकाइयां हैं।
- पिछले 10 वर्षों के दौरान महिलाओं द्वारा आवेदित सभी अनुदानों में से लगभग 52 आवेदन सफल रहे हैं।
- लगभग 92 उत्तरदाताओं ने पेटेंट दर्ज (patents applied) किया है, जिसमें 53 महिलाओं ने कुल 150 पेटेंट में योगदान (patents granted) दिया।
- यह पाया गया है कि 159 उत्तरदाताओं ने 3085 पत्रिका (जर्नल) लेखों की समीक्षा की है और 85 उत्तरदाताओं ने अनुदान आवेदनों (grant applications) के लिए 731 समीक्षाएं की हैं।
- प्रतिष्ठित शोधपत्रिकाओं में 212 एकलशोध पत्र लिखने वाली 40 महिलाएं हैं। 181 महिलाएं 1700 शोध पत्रों में प्रथम लेखिका हैं।
- 191 महिलाओं ने अन्य शोधकर्ताओं के साथ सह–लेखक के रूप में लगभग 3350 शोध पत्र प्रकाशित कराए हैं।
- 137 महिलाओं के नाम 693 पुरस्कार या मान्यताएं हैं।
- लगभग 1500 विशेषज्ञ व्याख्यान देने के लिए 150 से अधिक महिलाओं को आमंत्रित किया गया है।
- 68 महिलाओं को 200 से अधिक प्रतिनियुक्तियों (Deputation) पर विदेश भेजा गया है।
- लगभग सभी प्रयोगशालाओं में कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के विरुद्ध सख्त नीतियां लागू हैं।
- यौन उत्पीड़न से संबंधित अधिकतर मामलों का निपटारा और समाधान पूरा हो चुका है।
- कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का सामना करने वाले उत्तरदाताओं में से केवल 25% ने ही अधिकारियों को इसकी सूचना दी है।
- लगभग 94% महिलाएं, पुरुषों और महिलाओं दोनों के साथ काम करने में सहज महसूस करती हैं जबकि केवल 4% महिलाएं केवल महिलाओं के साथ काम करने में सहज महसूस करती हैं।
- पथ प्रदर्शक के रूप में, महिला मेंटर के पास, छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक है।
- अधिकतर उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके कौशल का उपयोग उनके कार्यों में उत्पादक तरीके से किया गया है।

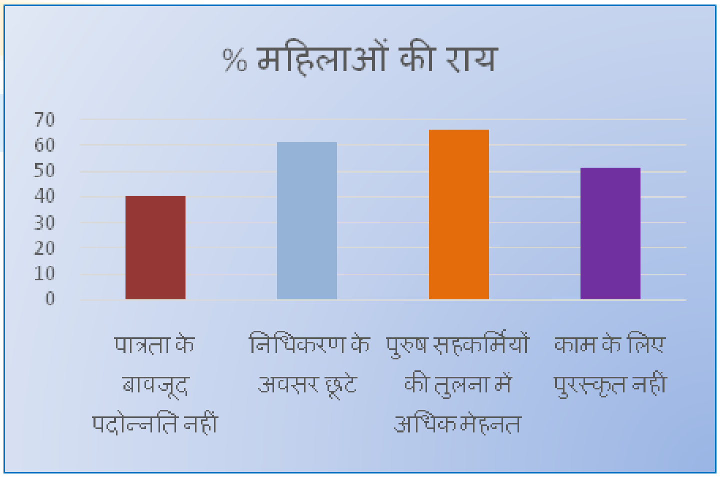

आकृति 3 : राय–आत्म मूल्यांकन

- 40% महिला वैज्ञानिकों ने उल्लेख किया कि पात्रता होने के बावजूद उन्हें उनके करिअर में उचित पदोन्नति नहीं दी गई।
- दो–तिहाई महिला उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि अपनी क्षमताओं को सिद्ध करने के लिए पुरुष सहयोगियों की तुलना में उन्हें अधिक मेहनत करनी पड़ी।
- लगभग 50% महिलाओं ने उल्लिखित किया कि उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में काम के लिए उन्हें उचित रूप से सम्मानित नहीं किया गया।
- लगभग 60% महिलाओं ने प्रोजेक्ट फंडिंग या अनुदान के छूटे हुए अवसरों के लिए नेटवर्किंग की कमी को जिम्मेदार ठहराया।
- लगभग 41% महिलाओं और छात्राओं को शादी के बाद काम का स्थान/शहर बदलना पड़ा।
- एक–तिहाई से अधिक महिलाएं अपने बच्चों की देखभाल के लिए घरेलू मदद पर निर्भर थीं। माता–पिता या ससुराल वालों के अलावा उनके पति भी इसमें सहायक रहे हैं।
- अधिकतर महिलाओं ने कहा कि उन्हें कार्यालय में काम के अलावा, घर से भी कार्यालय का काम करना पड़ता है।
- सीएसआईआर की लगभग 78% महिला वैज्ञानिक और तकनीकी अधिकारी और अकादमी की 55% छात्राओं को अपने माता–पिता, ससुराल या भाई–बहनों की देखभाल करने की आवश्यकता है।
- विवाहित महिलाओं का एक उच्च प्रतिशत काम पर तनाव महसूस करता है लेकिन तनाव प्रबंधन तक उनकी पहुंच कम होती है।
- 77% प्रयोगशालाओं में क्षमता निर्माण कार्यक्रम हैं और 53% में तनाव प्रबंधन कार्यक्रम हैं।
- उत्तरदाताओं में 9% माताएँ एकल माता हैं।
- एकल माताओं की तुलना में उन माताओं के लिए काम पर तनाव होने की संभावना कम होती है जो एकल माता नहीं हैं।
- सार्वजनिक परिवहन उपयोग करने वाली महिला उत्तरदाताओं की संख्या एक–चौथाई से भी कम है। लगभग 37% महिलाएं यातायात के साधन के रूप में निजी वाहन का उपयोग करती हैं, उनमें से लगभग 5% महिलाएं मेट्रो से आती–जाती हैं, जबकि 24% महिलाएं पैदल चलते हुए काम पर जाना पसंद करती हैं।
- महिला उत्तरदाताओं के अनुसार यात्रा अनुदान प्राप्त करना आसान नहीं रहा है, लेकिन अन्य शहरों में आने–जाने या आवास की व्यवस्था करना. इसकी तुलना में आसान है।
- अधिकतर प्रयोगशालाओं में स्तनपान कराने वाली माताओं को फ्लैक्सी टाइम और फीडिंग रूम उपलब्ध नहीं कराया जाता है जो एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि इसका महिलाओं के कामकाजी जीवन की गुणवत्ता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। केवल 25% प्रयोगशालाओं में ही फीडिंग रूम की सुविधा उपलब्ध है जबकि 64% प्रयोगशालाओं में महिलाओं के लिए विश्राम कक्ष उपलब्ध हैं।

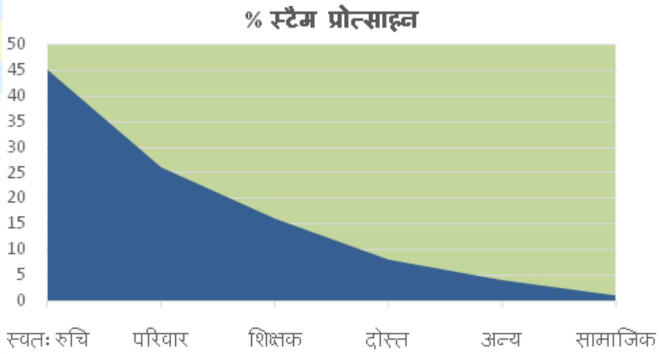

आकृति 4 : स्टैम के लिए महिलाओं को प्रोत्साहन

- स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए फ्लैक्सी–टाइम की सुविधा केवल 27% प्रयोगशालाओं में उपलब्ध है।
- 25% प्रयोगशालाओं में महिला कर्मचारियों के लिए निजीकृत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- अधिकतर प्रयोगशालाओं में मासिक–धर्म संबंधी स्वच्छता बनाए रखने की सुविधाओं का अभाव है।
- आधे से अधिक महिला उत्तरदाताओं ने अपने कार्यस्थलों पर शौचालयों को उचित या नीचे का दर्जा दिया है।
- अध्ययन की गई लगभग आधी प्रयोगशालाओं द्वारा महिलाओं के लिए क्रेच और कार्यशालाएं प्रदान की जाती हैं।
- 61% प्रयोगशालाओं में महिलाओं के लिए आउटरीच कार्यक्रम हैं, और लगभग 68% प्रयोगशालाओं में लिंग संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- 48% प्रयोगशालाओं में विशेष रूप से महिलाओं के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।
- 10% उत्तरदाताओं के अभिभावक स्टैम में शिक्षा प्राप्त करते थे, जबकि उनमें से लगभग 61.5% के माता–पिता गैर–स्टैम शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले थे।
- केवल 2.8% उत्तरदाताओं के अभिभावक स्टैम में शैक्षिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमि वाले थे, जबकि 60% उत्तरदाताओं के माता–पिता गैर–स्टैम शिक्षा और व्यवसाय में थे।

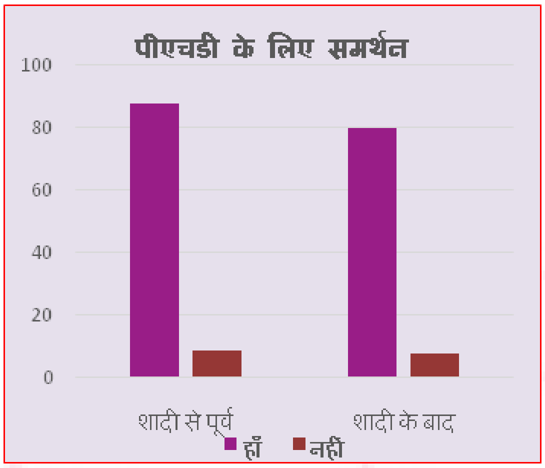

आकृति 5 : पीएचडी के लिए परिवार का समर्थन

- उत्तरदाताओं में से 45% महिलाएँ स्वयं स्टैम को करिअर के रूप में अपनाने में रुचि रखती थीं।
- स्टैम में प्रमुख विद्वानों के अलावा, शिक्षक और माता–पिता, विशेष रूप से पिता, स्टैम को करिअर के रूप में लेने के लिए महिलाओं के लिए आदर्श रहे हैं।
- महिलाओं को पीएच.डी. करने के लिए शादी से पहले या शादी के बाद भी, ज्यादातर परिवारों द्वारा समर्थन दिया गया है।
- तीन–चौथाई से अधिक महिलाओं ने, स्टैम को करिअर के रूप में लेने के लिए अन्य महिलाओं को सुझाव दिया है।
- आत्म उत्साह को उत्तरदाताओं के लिए वर्तमान असाइनमेंट या नौकरी लेने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारण के रूप में उद्धृत किया गया है।

अकादमी- अवलोकन

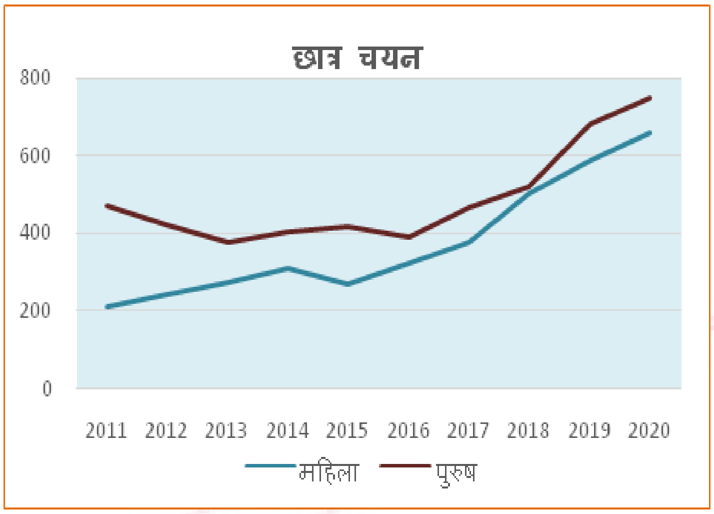

आकृति 6 : वैज्ञानिक एवं नवाचारी अनुसंधान अकादमी में छात्र चयन

- 2011–2020 की अवधि में कुल आवेदनों में से 40% आवेदन छात्राओं द्वारा किए गए हैं।
- 2011–2020 की अवधि में केवल जैविक विज्ञान में आवेदकों के बीच महिलाओं का अनुपात अधिक है और फिर भी अधिक छात्रों को चुना गया है।

- जैविक विज्ञान समूह में छात्राओ ंका प्रतिशत 41% से अधिक रहा है।
- जैविक विज्ञान समूह में महिला छात्राओं की वर्तमान संख्या पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक है, और इसकी पुनरावृत्ति रासायनिक विज्ञान तथा भौतिकी और सूचना विज्ञान समूह में है।
- अन्य सभी विषय समूहों में 10 वर्ष की अवधि के लिए महिला आवेदन 30–40% के बीच हैं।
- रसायन विज्ञान समूह में वर्ष 2018 तक छात्राओं के प्रवेश में क्रमिक वृद्धि हुई है।
- इंजीनियरिंग विज्ञान समूह–2011 और 2013 के लिए छात्राओं की संख्या छात्रों की संख्या से अधिक है।

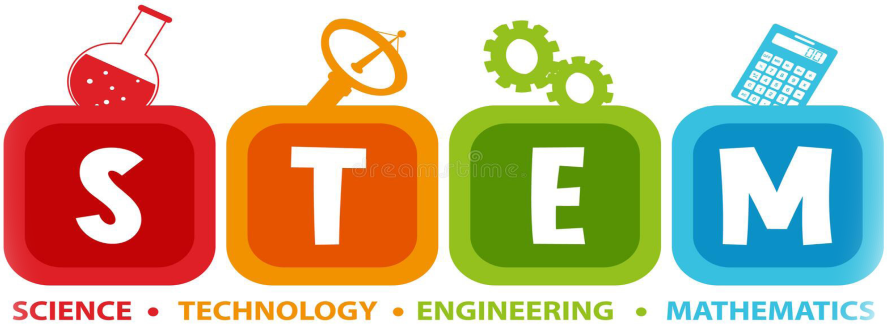

वैज्ञानिक एवं नवाचारी अनुसंधान अकादमी (AcSIR) के विभिन्न पाठ्यक्रमों में एक महत्वपूर्ण अनुपात में छात्राओं को चुना गया है। यह सीएसआईआर के नवगठित निकाय के रूप में इस अकादमी की एक महत्वपूर्ण पहल है। यह उपलब्धि महिलाओं को स्टैम की ओर आकर्षित करने में सीएसआईआर का उल्लेखनीय योगदान है।

- इंजीनियरिंग विज्ञान समूह में छात्राओं का अनुपात वर्तमान संख्या, कुल आवेदनों और चयन के मामले में लगभग एक–तिहाई है।

उत्तरदाताओं की समस्याएं

- महिला उत्तरदाताओं को उनके काम की उचित मान्यता और श्रेय (क्रैडिट) की कमी का अनुभव होता है ।
- मातृत्व अवकाश, सीसीएल आदि के कारण उन्हें देर से पदोन्नति मिलती है ।
- विवाह योग्य उम्र में होने के कारण महिला उम्मीदवारों को डॉक्टरेट के बाद नौकरी पाने में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जबकि पुरुष उम्मीदवारों को ज्यादातर प्राथमिकता दी जाती है।
- नौकरी की तलाश करने वाली महिला उम्मीदवारों को अक्सर मातृत्व अन्तराल के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है ।
- संस्थान की समितियों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम, कभी–कभी सिर्फ नाम और हस्ताक्षर के लिए होता है ।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए महिलाओं को नामांकित करते समय भेदभाव किया जाता है।
- महिला तकनीकी कर्मचारियों को पीएच.डी. करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है।
- उपकरण, रसायन, प्रयोगशाला सुविधाओं आदि कीउपलब्धता के लिए पुरुष समकक्षों पर निर्भरता।
- विवाह और बच्चे के जन्म के बाद, आवेदन की अस्वीकृति की आवृत्ति अधिक होती है।
- पुरानी सोच जहां शोध में महिला सहयोगियो को गंभीरता से नहीं लिया जाता है।
- स्टैम में महिलाओं को प्रोत्साहित करने हेतु सुझाव
- वैज्ञानिक और तकनीकी स्तरों पर अधिक महिलाओं की भर्ती की जानी चाहिए।
- स्टैम भर्ती में महिलाओं को आयु सीमा में छूट देना
- यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि महिला कर्मचारियों का करिअर विकास उनके पुरुष समकक्षों के समान हो।
- रोल मॉडल, अध्यक्ष और निर्णय लेने वाली समितियों में सदस्य के रूप में नेतृत्व के पदों पर अधिक महिलाएं हों।

- लिंग संतुलित समितियाँ, विभिन्न समितियों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए न कि केवल कोरम को पूरा करने के लिए।
- महिलाओं को संस्थानों और अनुसंधान समूहों आदि के प्रमुख के रूप में नेतृत्व करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- युवा महिलाओं (35 वर्ष से कम) को संस्थागत समितियों में जिम्मेदार भूमिकाओं के साथ भविष्य की तैयारियों के लिए सशक्त बनाना।
- महिला कल्याण संबंधी नीतियों और कार्यक्रमों का आकलन और आवधिक निगरानी की जानी चाहिए।
- परिसर में महिलाओं की उचित सुरक्षा होनी चाहिए।
- आवास, परिवहन, परिवार देखभाल और स्वास्थ्य देखभाल जैसी सहायता सेवाएं उपलब्ध होनी चाहिए।
- यौन उत्पीड़न समितियों को उनकी प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए सुदृढ़ बनाना।
- लिंग संवेदीकरण कार्यक्रम प्रत्येक प्रयोगशाला के लिए आवश्यक हैं और विशेष रूप से महिलाओं के लिए तनाव प्रबंधन पर अधिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
- सभी प्रयोगशालाओं में क्रेच सुविधाएं, बाल देखभाल सुविधाएं और स्वच्छ शौचालय उपलब्ध हो।
- युवा शोधकर्ताओं के लिए स्टैम में प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्वों की सफलता की कहानियों के साथ एक समर्पित पोर्टल होना चाहिए।
- सी.एस.आर. (Corporate Social Responsibility) के तहत, प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के लिए एसएंडटी पार्क स्थापित किए जा सकते हैं ताकि कौशल वृद्धि के लिए प्रशिक्षण दिया जा सके और महिला उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा सके।

प्रो. रंजना अग्रवाल
संध्या वाकडीकर
डॉ. प्रवीन शर्मा
सीएसआईआर-निस्पर

संदर्भ :

- ☐ अग्रवाल, आर., वाकडीकर, एस., और शर्मा, पी. (2022ए), Women in STEM "A CSIR survey towards Gender Parity" सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, आईएसबीएन 978–81–7236–371–0
- ☐ अग्रवाल, आर., वाकडीकर, एस., और शर्मा, पी. (2022बी), "Main streaming Gender at Workplace:CSIR & NIScPR evaluates Women in STEM", साइंस रिपोर्टर, 59 (3), 54–55
- ☐ अग्रवाल, आर., वाकडीकर, एस., और शर्मा, पी. (2022सी), "Women in STEM: A CSIR study for Gender Equality", सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, सीएसआईआर–निस्पर नीति बुलेटिन/अप्रैल–2022/04

महान हैं बिरसा और महान उनका योगदान

प्रांजल धर

बिरसा मुण्डा हमारी साझी विरासत का नाम है। हमारे देश की सर्वोच्च संस्था संसद के सेण्ट्रल हॉल में उनका चित्र टाँगा गया है। रांची के डिस्टिलरी पुल के पास बिरसा की समाधि भी स्थापित की गई है। वहीं उनकी मूर्ति भी स्थापित की गई है। बिरसा की स्मृति में राँची के केन्द्रीय कारागार का नाम भी बदल दिया गया है और साथ ही राँची हवाई अड्डे का नाम भी बिरसा मुण्डा हवाई अड्डा कर दिया गया है। यह बिरसा की महानता का ही सूचक है कि उन्हें भगवान माना जाता है। आदरपूर्वक उन्हें भगवान बिरसा, महात्मा बिरसा, धरती–आबा और धरती–अब्बा (पृथ्वी पिता) कहा जाता है। हर साल 15 नवम्बर को बिरसा मुण्डा की जयन्ती मनायी जाती है। यह जयन्ती पूरे भारत में और विशेष तौर पर आदिवासी समाज में अत्यधिक हर्षोल्लास और आदर के साथ मनायी जाती है।

बिरसा मुण्डा उन्नीसवीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनका जन्म 15 नवम्बर सन् 1875 को तत्कालीन बिहार प्रदेश के राँची जिले में स्थित उलिहातू गाँव में हुआ था। गौरतलब है कि तब झारखण्ड और बिहार एक ही राज्य हुआ करते थे और बंगाल विभाजन भी नहीं हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारम्भिक पढ़ाई–लिखाई के बाद बिरसा चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने गए। यहाँ उन्होंने ईसाइयत (क्रिश्चियनिटी) को भी नजदीक से देखा और महसूस किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि आदिवासी समाज मिशनरियों से तो भ्रमित है ही, हिन्दू धर्म को भी सही से समझ नहीं पा रहा है।

झारखण्ड के उलिहातू नामक गाँव में सन् 1875 में जन्मे बिरसा मुण्डा ने सन् 1895 में खुद को भगवान का दूत घोषित कर दिया था। उस समय बँटाई की खेती करने वाले परिवार के सदस्य बिरसा की अवस्था मात्र इक्कीस वर्ष की थी। बिरसा ने कहा कि भगवान ने उन्हें गजब की ताकत दी है। देखते ही देखते बिरसा आदिवासियों के नेता बन गए और हजारों आदिवासी उनसे मिलने–जुलने आने लगे। बिरसा ने कुछ प्राचीन अन्धविश्वासों का खण्डन भी किया और लोगों को सलाह दी कि वे हिंसा से और मादक पदार्थों से दूर रहें। बिरसा की बातों और आचरण का असर यह हुआ कि न सिर्फ ईसाई धर्म स्वीकार करने वाले लोगों की तादाद घटने लगी, बल्कि जो मुण्डा लोग ईसाई बन गए थे, वे फिर से मुण्डा रीति–रिवाजों की तरफ लौट आए।

बिरसा का बचपन अपने घर और ननिहाल में गुजरा। उनका कुछ वक्त अपनी मौसी की ससुराल में बकरियाँ चराते हुए बीता। बाद में कुछ दिनों तक बिरसा ने चाईबासा के जर्मन मिशनरी स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। कहा जाता है कि स्कूलों में उनकी आदिवासी संस्कृति का जो मजाक उड़ाया जाता था, वह बिरसा को सहन नहीं होता था। इसीलिए बिरसा ने भी पादरियों को और उनके धर्म को कभी गम्भीरता से नहीं लिया। चाईबासा जर्मन मिशन के पादरी नोतरोत–स्वर्ग के राज्य के सिद्धांत पर विस्तार से प्रकाश डाल रहे थे। इसी क्रम में पादरी नोतरोत ने कहा कि यदि मुण्डा आदिवासी लोग ईसाई बने रहे

और उनके अनुदेशों का पालन करते रहे तो वे उन लोगों की छीनी हुई जमीन वापस करा देंगे।

एक ओर अंग्रेजी सरकार मालगुजारी न देने पर झारखंडियों की जमीन नीलाम कर रही थी, दूसरी ओर अंग्रेजी सरकार की मिशनरी उनकी जमीन वापसी करा कर धर्मान्तरित कर रही थी। ये दोहरा खेल बहुत कष्टकारी और असहनीय था। पादरी नोतरोत ने एक दिन बिरसा मुंडा की उपस्थिति में कहा : ये मुंडा सरदार लोग बेइमान होते हैं (धर्म परिवर्तन में बाधक होने के कारण)। तुरंत बिरसा मुंडा ने इस पर प्रतिवाद किया – मुंडा लोग तो बेईमान क्या होता है उसे जानते भी नहीं और आप हमें बेईमान कह रहे हैं। जरा बताइए तो हम मुंडाओं ने किसकी धरती लूटी, किसका धन लूटा, किसका धर्म लूटा, किसकी धाक (राज्य) लूटी? ये सब तो आप लोग लूट रहे हैं। हमारा आदि धर्म तक आप ने लूट लिया और हमें बेईमान कहते हैं! पादरी नोतरोत ने कहा, क्या है तुम्हारा धर्म, कौन है तुम्हारा मसीहा, कौन है तुम्हारा पैगंबर, कौन है तुम्हारा अवतारी? बिरसा ने कहा मैं हूँ बीर ईसा (बिरसा), मैं हूँ, अपने धर्म का मसीहा। इस विरोध के बाद बिरसा पढ़ाई और मिशन दोनों का त्याग कर चाईबासा से केन्दार गांव के कपड़ा बुनकर आनंद पांडे के यहां आ गए जो रामायण, महाभारत और जड़ी–बूटी के अच्छे जानकार थे।

बिरसा आनंद पांडे के पास क्यों आये, इसका एक मौखिक इतिहास है। एक बार चाईबासा बाजार में बिरसा मुंडा अपने पिता सुगना उर्फ मसीह दास आनंद पांड से कपड़े खरीद रहे थे, तभी एक विदेशी पादरी आया और उसने आनंद पांड से पूछा कि चाईबासा का गिरजाघर कहां पर है? उस विचित्र रंगरूप वेश–भूषा के पादरी से आनंद पांड ने पूछा, आप कौन है? उसने कहा, मैं पादरी हूं। आनंद पांडे ने पूछा ये पादरी क्या होता है? पादरी ने कहा–पादरी स्वर्ग का रास्ता बताता है।

आनंद पांडे को वह विचित्र व्यक्ति लगा। आनन्द पांडे ने कहा कि तुम स्वर्ग का रास्ता जानते हो और गिरजाघर का रास्ता नहीं जानते, कैसे पादरी हो? ये घटना पादरी नोतरोत के मुंडा सरदार बेइमान होते हैं वाली घटना के कुछ ही पहले की घटना थी। इक्कीस

वर्ष की उम्र में बिरसा उर्फ दाउद हमेशा के लिए ईसाई धर्म त्याग कर वैष्णव भक्त बनकर आनंद पांडे के पास आ गए और अपना दूसरा गुरु बनाया। बिरसा के पहले गुरु थे इलियास जयपाल नाग। बिरसा ने आंनद पांडे से राम और कृष्ण के बारे में जाना कि कैसे रावण तथा कंस का अंत किया गया था। वैसे ही अंग्रेज और उनके सहयोगी मिशन को बिरसा ने कहा – साहेब साहेब एक टोपी। इन्हें केले के थम्भ की तरह बो.. बो..बो.. करते एक ही बार में काट डालो। इस तरह मिशन वालों ने बिरसा मुंडा द्वारा गठित बिरसाइयत पंथ की लोकप्रियता को देखते हुए बिरसा को बालू बिरसा (पागल बिरसा) घोषित कर दिया।

सन् 1897 में झारखंड में अचानक अकाल पड़ा। लोग भूख से तड़प रहे थे, तब अंग्रेज बहादुर इंग्लैंड में महारानी विक्टोरिया की पचासवीं जयंती पर जुबली मना रहे थे। तब बिरसा मुंडा को हजारीबाग जेल से मुक्त कर दिया गया था। उन्हें 26 अगस्त 1895 को चलकद आश्रम से एसपी मेयर्स, पादरी लास्टी और जमींदार जगमोहन सिंह ने गिरफ्तार किया था। 8 जनवरी 1900 को शैलरकण पहाड़ पर बिरसा की सभा में, जिसमें बच्चे और महिलाएँ भी थीं, जिलाधीश स्ट्रीट फील्ड, कमिश्नर फोरबीस ने गोली चलवायी, जिसमें 400 से अधिक बिरसायइत (बिरसा के अनुयायी) निर्दोष मारे गये थे।

4 फरवरी 1900 को जराई केला के रोगतो गांव

के सात मुंडाओं ने पाँच सौ रुपये के इनाम के लालच में सोते हुए बिरसा को खाट सहित बांध कर बंदगांव लाकर अंग्रेजों को सौंप दिया था। मजिस्ट्रेट डब्ल्यू. एस. कुटुस की अदालत में बिरसा पर झूठा मुकदमा चलाया गया। बैरिस्टर जैकण ने बिरसा मुंडा की वकालत की। लेकिन अंगरेजों की अजीबोगरीब न्याय व्यवस्था में सब व्यर्थ गया। अपने देश, मातृभूमि और समाज की मुक्ति के लिए लड़ने वाला क्या अपराधी होता है? अंगरेजों ने दिखा दिया कि अदालत जनता को तबाह करने की जगह है। झारखंड के लिए, या कहें देश की आजादी के लिए अबुआ दिसुम अबुआ राज की स्थापना के लिए उलगुलान करने वाले महानायक भगवान बिरसा मुंडा रांची के पुराने जेल में 9 जून 1900 को आजादी का रास्ता दिखा संसार से विदा कर दिये गये।

यह ठीक है कि बिरसा के पिता सुगना मुंडा जर्मन धर्म प्रचारकों के सहयोगी थे और बिरसा के चाचा, ताऊ अदि ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था लेकिन बिरसा की लड़ाई धार्मिक आधारों पर नहीं हुई थी। बिरसा के इस आन्दोलन का स्वरूप प्रारम्भ में भले ही धार्मिक रहा लेकिन शीघ्र ही यह खेतिहर मजदूरों के राजनीतिक आन्दोलन में परिवर्तित हो गया। नई शताब्दी की शुरूआत और सन् 1899 में क्रिसमस की पूर्व सन्ध्या पर मुंडा विद्रोह का बाकायदा ऐलान किया गया। तीरों से पुलिस थानों पर आक्रमण करके उनमें आग लगा दी गई। ठेकेदारों, जागीरदारों, राजाओं, हाकिमों और ईसाइयों का कत्ल करने का आह्वान हुआ। कलयुग का अन्त करके सतयुग लाने की घोषणा करने वाले बिरसा ने हिदायत दी कि गरीब गैर–आदिवासियों पर हमले नहीं किये जाएँगे।

करीब छह हजार मुंडा तीर–तलवार, कुल्हाड़ी और दूसरे पारम्परिक हथियारों से लैस होकर बिरसा को समर्थन देने लगे। लेकिन जब तीर–कमान वाले मुण्डा समुदाय का सामना अंग्रेजी सेना से हुआ तो ये तीर–कमान गोलियों का सामना नहीं कर सके। बिरसा के साथी बड़ी संख्या में शहीद हुए। दुर्भाग्यवश बिरसा मुण्डा फरवरी 1900 में गिरफ्तार कर लिए गए और इसी साल 9 जून को विदेशी शासन के तहत जेल में उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि शायद उन्हें

विष दे दिया गया था। लेकिन लोक गीतों और जातीय साहित्य में बिरसा मुंडा आज भी अमर हैं। आदिवासी नेता और लोकनायक बिरसा मुण्डा को आज भी रांची और सिंहभूमि के लोग 'बिरसा भगवान' कहकर याद करते हैं।

वर्तमान झारखण्ड राज्य की राजधानी रांची में बिरसा मुंडा की एक ऐसी मूर्ति स्थापित है जिसे देखते ही भीतर तक इस बात का अहसास होता है कि असल में वीरता होती क्या है! यह बिरसा के व्यक्तित्व की वीरता का एक महत्वपूर्ण पहलू है कि जब सन् 1894 में छोटा नागपुर के इलाके में मानसून नहीं आया और भयंकर अकाल और महामारी फैल गई तब बिरसा ने आम जन की व्यापक स्तर पर पूरे मनोयोग से सेवा की थी। मुंडा विद्रोह ने उस अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बहुत बड़ी चुनौती पेश की थी, जिसका सूरज कभी अस्त नहीं होता था। यह बात अलग है कि मुंडा आदिवासियों का विद्रोह 1899–1900 के बीच हुआ था, न कि 1857 की पहली जनक्रान्ति के समय। लेकिन इससे मुंडा विद्रोह, जिसे उलगुलान की संज्ञा दी जाती है, का महत्व कम नहीं हो जाता। सामूहिक खेती करने वाली मुंडा आदिवासी जाति का नेतृत्व बिरसा मुण्डा ने किया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक 'आदिवासी' शब्द की अवधारणा उस रूप में प्रचलित नहीं थी, जैसी आज है। लेकिन आज जिन समुदायों को हम 'आदिवासी'

कहते हैं, उन्नीसवीं सदी में उनके शोषण का उल्लेख मिलता है। माना जाता था कि आदिवासी समुदाय जुझारू, संघर्षकारी, युद्धप्रिय, हिंसातुर, संवेदनशील और बागी लोगों का है। मान्यता थी कि ये आदिवासी सभ्यता से कोसों दूर हैं, दूर–दराज और दुर्गम भौगोलिक इलाकों में रहते हैं और पिछड़े हैं। बहरहाल यह बात गौरतलब है कि आदिवासियों की लड़ाई सिर्फ बाहरी औपनिवेशिक शासकों से ही नहीं थी, बल्कि वह भीतरी शत्रुओं यानी शोषकों, सूदखोरों और स्थानीय सत्ता–प्रतिद्वन्द्वियों के भी खिलाफ थी।

बिरसा मुंडा के आन्दोलन की एक वैचारिक पृष्ठभूमि है। आदिवासी अपने को आमतौर पर शेष समाज और व्यवस्था से अलग–थलग रखते थे। जमीनों पर उनका हक था और जंगलों से उनका बड़ा गहरा रिश्ता था, जहाँ उनका जीवन पूरी तरह स्वछन्द और प्रकृति के काफी निकट था। भोजन, ईंधन और पशुओं का चारा आदि वे जंगलों से ही इकट्ठा करते थे। इसके अलावा 'झूम' और 'पडु' विधियों की उनकी खेती भी जंगलों और जमीन से ही जुड़ी हुई थी। इन विधियों के तहत जब उन्हें लगता था कि उनके खेत अब उपजाऊ नहीं रह गए हैं, तो वे जंगलों को साफ करके कृषि–कार्यों के लिए नई जमीन तैयार कर लेते थे।

हमारे देश के पूर्वोत्तर के राज्यों में कुछ जगहों पर तो खेती–किसानी का 'झूम' और 'पडु' वाला तरीका आज भी प्रयोग में लाया जाता है। जाहिर है कि मुंडा लोगों की व्यवस्था या धार्मिक रीति–रिवाजों और मान्यताओं के साथ–साथ उनकी अर्थव्यवस्था भी भिन्न और अलग किस्म की थी। लेकिन बाहरी लोगों और औपनिवेशिक राज की घुसपैठ ने उनके ताने–बाने को ही उलट दिया। ब्रिटिश राज ने आदिवासियों के इस एकान्त और अलगाव को नष्ट करके उन्हें शोषण की परिधि में घसीटने का पूरा प्रयत्न किया। ब्रिटिश शासन द्वारा थोपी गई लगान की नई प्रणाली ने भी आदिवासियों को खासा परेशान कर रखा था।

शहादत के पहले फरवरी 1900 में बिरसा की जो गिरफ्तारी हुई थी वह उनकी पहली गिरफ्तारी नहीं थी। जब बिरसा ने किसानों का शोषण करने वाले जमींदारों के खिलाफ संघर्ष का आह्वान किया था तब अंग्रेजी सरकार ने उन्हें रोका था कि वे लोगों की भीड़ न इकट्ठा करें क्योंकि अंग्रेजी सरकार भीड़ और एकजुटता की ताकत से सन् 1857 में ही भलीभाँति परिचित हो चुकी थी। बिरसा ने जब यह कहा था कि मैं तो अपनी जाति को अपना धर्म सिखा रहा हूँ तो अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया था लेकिन ग्रामीण जनता ने उन्हें छुड़ा लिया था। इसके बाद जल्द ही उनकी फिर गिरफ्तारी हुई और दो साल के लिए उन्हें हजारीबाग जेल में कैद कर दिया गया।

बाद में जब उन्हें छोड़ा गया तो इस चेतावनी के साथ कि वे किसी किस्म का कोई प्रचार नहीं करेंगे। सन् 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडा लोगों का संघर्ष अंग्रेज सेनाओं से हुआ जिसमें अंग्रेजी सेना को अपनी सीमा का अहसास हो गया। बाद में जनवरी 1900 में डोमबाड़ी पहाड़ी पर भी एक संघर्ष हुआ जिसमें मुंडा लोगों के तमाम बच्चे और महिलाएँ शहीद हुए। इस जगह बिरसा एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। एक तरफ बिरसा की लड़ाइयाँ रुकने वाली नहीं थीं और दूसरी तरफ अंग्रेज सरकार 1857 में बुरी तरह अपना हाथ जला चुकी थी, इसीलिए बिरसा की गिरफ्तारी फरवरी 1900 में निर्णायक और अन्तिम रूप से की गई।

हम सभी जानते हैं कि सिर्फ इतिहास ही वर्तमान को नहीं बनाता, वर्तमान भी इतिहास को बनाता है। बिरसा के महान संघर्ष के बाद भी भारत में करीब आधी शताब्दी तक अंग्रेजों का ही शासन बरकरार रहा। अंग्रेजी विचारों और पश्चिमी दृष्टिकोण से लदे एकपक्षीय इतिहास–लेखन ने बिरसा को ही नहीं, बल्कि तमाम ऐसे महत्वपूर्ण संघर्षों को इतिहास में वाजिब स्थान नहीं दिया। जब भारत स्वतन्त्र हुआ, बल्कि कहना चाहिए कि लगभग एक दशक पहले जब 1857 की जनक्रान्ति की डेढ़ सौवीं बरसी मनायी गयी, तब इन चीजों पर मुकम्मल चिन्तन आकार लेने लगा। कहना न होगा कि बिरसा के बिना आजादी की महान लड़ाई का मुकम्मल अध्ययन सम्भव ही नहीं है।

प्रांजल धर
सहायक अनुभाग अधिकारी
सीएसआईआर-निस्पर

अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 - एक जानकारी

मीनाक्षी गौड़

"वेबएमडी की रिपोर्ट के मुताबिक, मोटा अनाज मोटापा, दिल की बीमारियां, टाइप-२ डायबिटीज और कैंसर का खतरा घटाता है, यह शरीर में ऐसे बैक्टीरिया की संख्या को बढ़ाता है जो आंतों की सेहत दुरुस्त रखते हैं. इसकी सबसे बड़ी वजह है फायबर और पोषक तत्व। चावल और मोटे अनाज की तुलना करें तो इनमें कई गुना अधिक पोषक तत्व पाए जाते हैं। यही वजह है कि मोटे अनाज को सुपर फूड भी कहा जाता है।"

अनाज की बात आती है तो गेहूं, चावल, चना, अलग–अलग किस्म की दालें ऐसी ही कई चीजें हैं जो भारत के साथ ही दुनिया के कई हिस्सों में बेहद चलन में हैं। गेहूं, दाल, चावल का उपयोग तो लगभग हर घर में होता है। रोटी, दाल चावल खाने की परंपरा पिछले कई दशकों से है, लेकिन कई और ऐसे अनाज हैं जो कभी खूब चलन में थे और मोटा अनाज इन्हीं को कहा जाता है। एक समय ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो मोटे अनाज से ही अपना भरण–पोषण करते थे। एक तो ये महंगा नहीं था और आसानी से उपलब्ध भी हो जाता था। अकाल या मुश्किल दिनों में मोटा अनाज काफी काम आता था। यह जल्दी खराब भी नहीं होता था। फिर धीरे धीरे मोटे अनाज की जगह गेहूं, धान (चावल) ने ले ली और यही चीजें लोगों की थाली का नियमित हिस्सा बन गईं। ग्रामीण इलाकों में भी गेहूं, धान ही चलन में आ गया। अब मोटे अनाज को लेकर फिर से खूब बातें हो रही हैं। मोटे अनाज का प्रयोग पारंपरिक फसलों पर निर्भरता को काफी कम कर सकता है। खास बात ये भी है कि मोटे अनाज को उगने के लिए बहुत अधिक सिंचाई और पानी की जरूरत नहीं पड़ती है। मोटे अनाज को चलन में लाने के लिए काफी कोशिशें की जा रही हैं।

देश में प्राचीन और पौष्टिक अनाज के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं भागीदारी की भावना पैदा करने के लिये कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा **अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष** 2023 का आयोजन किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के लिए 8 मोटे अनाजों को शामिल किया गया है। इनमें बाजरा रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदो शामिल हैं। भारत के प्रस्ताव पर 72 देशों के समर्थन के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने साल 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष घोषित किया है। दुनिया के कई देशों में मोटे अनाजों को लेकर कार्यक्रम हो रहे हैं। भारत में भी इसको लेकर कई तरह की तैयारियां चल रही हैं। किसानों को मोटे अनाज उगाने और लोगों को खाने के लिए उपयोग करने को प्रेरित किया जा रहा है।

ऐसे में लोगों की थालियों तक 8 प्रकार के पोषक अनाजों को पहुंचाना चुनौतीपूर्ण काम है। इस चुनौती को आसान बनाने के लिए मिलेट के प्रोसेस्ड फूड यानी प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

ये फूड प्रोडक्ट उन 8 मोटे अनाजों से बनाए जाएंगे, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के लिए चिन्हित किया गया है।

इसके तहत भारत में कई कार्यक्रम शुरू किये गए जैसे–**'इंडिया वेल्थ, मिलेट्स फार हेल्थ', मिलेट स्टार्टअप इनोवेशन चैलेंज, माइटी मिलेट्स क्विज, लोगो और स्लोगन प्रतियोगिता आदि।**

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य खाद्य सुरक्षा और पोषण में पोषक अनाज/बाजरा/मोटे अनाज के योगदान के बारे में जागरूकता का प्रसार करना, पोषक अनाज के टिकाऊ उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार के लिये हितधारकों को प्रेरित करना तथा इन दोनों उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये अनुसंधान और विकास एवं विस्तार सेवाओं में निवेश बढ़ाने पर ध्यान देना है।

पोषक अनाज सामूहिक शब्द है जो कई छोटे–बीज वाली फसलों से संबन्धित है, जिसकी खाद्य फसल के रूप में मुख्य रूप से समशीतोष्ण, **उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों** व शुष्क क्षेत्रों में सीमांत भूमि पर खेती की जाती है। भारत में उपलब्ध कुछ सामान्य फसलों में बाजरा, रागी (फिंगर मिलेट), ज्वार (सोरघम), समा (छोटा बाजरा), बाजरा (मोती बाजरा) और वरिगा (प्रोसो मिलेट) शामिल हैं। इन अनाजों के प्रमाण सबसे पहले **सिंधु सभ्यता** में पाए गए और ये भोजन के लिये उगाए गए पहले पौधों में से थे। यह लगभग 131 देशों में उगाया जाता है और एशिया एवं अफ्रीका में लगभग 60 करोड़ लोगों का पारंपरिक भोजन है। विश्व में भारत बाजरे का सबसे बड़ा उत्पादक है। यह वैश्विक उत्पादन का 20% और एशिया में उत्पादन का 80% हिस्सा है।

बाजरा दुनिया में भारत, नाइजीरिया और चीन, बाजरे के सबसे बड़े उत्पादक हैं, जो वैश्विक उत्पादन के 55% से अधिक हैं।

कई वर्षों तक भारत बाजरे का प्रमुख उत्पादक था। हालाँकि, हाल के वर्षों में अफ्रीका में बाजरे के उत्पादन में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है।

उच्च प्रोटीन, फाइबर, विटामिन, लौह तत्त्व जैसे खनिजों के कारण बाजरा कम खर्चीला और पौष्टिक रूप से गेहूँ एवं चावल से बेहतर होता है।

बाजरा कैल्शियम और मैग्नीशियम से भी भरपूर होता है।

बाजरा पोषण सुरक्षा प्रदान कर सकता है और विशेष रूप से बच्चों एवं महिलाओं में पोषण की कमी के खिलाफ एक ढाल के रूप में कार्य कर सकता है। इसकी उच्च लौह सामग्री भारत में प्रजनन आयु की महिलाओं तथा शिशुओं में **एनीमिया** के उच्च प्रसार से लड़ सकती है।

बाजरा जीवनशैली की समस्याओं और मोटापे एवं मधुमेह जैसी स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकता है क्योंकि यह **ग्लूटेन फ्री** (एक प्रकार का प्रोटीन जो कभी–कभी सेहत के लिये हानिकारक भी हो सकता है) होता है और इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है (खाद्य पदार्थों में कार्बोहाइड्रेट की एक सापेक्ष रैंकिंग यह है कि वे रक्त शर्करा के स्तर को कैसे प्रभावित करते हैं)।

बाजरा प्रकाश के प्रति असंवेदनशील होता है (फलने के एक विशिष्ट समय में इसे प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है) और इस पर जलवायु परिवर्तन का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। बाजरा खराब मिट्टी में भी बहुत कम या बिना किसी सहायता के उग सकता है। बाजरा सबसे ज्यादा उगाया और खाया जाने वाला मोटा अनाज है। इसकी सबसे ज्यादा खेती भारत में होती है। इसके साथ ही अफ्रीका में भी इसकी पैदावार होती है। बाजरा को कई इलाकों में बजरी और कंबु के नाम से भी जानते हैं। बाजरा को हर तरह की मिट्टी में उगाया जा सकता है। कम सिंचाई वाले इलाकों के लिए बाजरा (Pearl Millet) की फसल वरदान है। इससे मोटे दानों को अलग करने के बाद पशु चारे के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। इतना ही नही, बाजरे के फसल अवशेषों से जैव ईंधन भी बनाया जाता है। प्रोटीन, फाइबर, अमीनो एसिड समेत कई न्यूट्रिएंट से भरपूर इस मिलेट से ब्रेड, दलिया, कुकीज समेत कई व्यंजन बनाए जाते हैं।

रागी रागी को देसी भाषा में नचनी भी कहते हैं। इस अनाज का रंग लाल–भूरा और स्वाद अखरोट जैसा होता है। रागी के लिए अधिक पानी की जरूरत नहीं पड़ती है। यह अनाज हर तरह की मिट्टी में पैदा होकर भी प्रोटीन विटामिन, आयरन, कैल्शियम और विटामिन–बी जैसे कई गुणों से भरपूर होता है। इसके नियमित सेवन से डायबिटीज और ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों को कंट्रोल कर सकते हैं। आज भारत के साथ–साथ पूरे एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में रागी (Fingure Millet) की खेती की जा रही है।

कंगनी कंगनी को एशियाई देशों में उगाया जाता है। इस मिलेट का दाना पीला होता है, जिसे दलिया से लेकर पुलाव जैसे कई व्यंजन बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। कम बारिश वाले इलाकों में उगने वाली कंगनी (Fotail Millet) प्रोटीन, फाइबर, आयरन, पोटेशियम और मैग्नीशियम से भरपूर होती है। कंगनी का स्वाद भी काफी हद तक अखरोट की तरह ही होता है।

सांवा सांवा को देश के अलग–अलग इलाकों में ऊडालू या झंगोरा के नाम से भी जानते हैं। सांवा का इतिहास भी बाकी मोटे अनाजों की तरह हजारों साल पुराना है। इसमें मौजूद पोषक तत्व–फाइबर, प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम और विटामिन–बी आदि शरीर को खास एनर्जी देते हैं। इसके नियमित सेवन से सूजन, हार्ट डिजीज और डायबिटीज का खतरा भी कम

होता है। किसान भी सांवा उगाना बेहद पंसद करते हैं, क्योंकि इसमें कीट या बीमारियां लगने का खतरा नहीं रहता।

चेना चेना एक ऐसा मोटा अनाज है, जो पूरी दुनिया में उगाया जाता है। भारत के साथ–साथ यूरोप, चीन और अमेरिका में इससे सूप, दलिया और नूडल बनाए जाते हैं। यह मिलेट फैट और कोलेस्ट्रॉल फ्री होता है। साथ ही, चेना (Proso Millet) प्रोटीन, फाइबर, विटामिन–बी, आयरन और जिंक समेत कई विटामिन और खनिजों का मेन सोर्स है।

कोदो कोदो एक पारंपरिक अनाज है, जिसे केद्रव भी कहते हैं। औषधीय गुणों से भरपूर कोदो के दाने काफी छोटे है, लेकिन इसकी फसल धान की तरह ही लगती है। लाल भूरे रंग के कोदो के दानों में कैंसर, मधुमेह और पेट के रोग दूर करने की शक्ति है ही। इसमें मौजूद प्रोटीन, फाइबर और कार्बोहाइड्रेट शरीर को हेल्दी रखने में मदद करते हैं।

ज्वार मिनरल, प्रोटीन, विटामिन–बी कॉम्प्लेक्स, कैल्शियम और आयरन समेत कई पोषक तत्वों से भरपूर ज्वार के दानों को लोग भूनकर खाते हैं। ज्वार के आटे से बना काजल आंखों को ठंडक देता है और कई रोगों को भी दूर करता है। खांसी –जुकाम होने पर ज्वार के दानों को गुड़ में मिलाकर खाया जाता है।

कुटकी कुटकी के ज्यादातर गुण चेना से मिलते हैं. इसकी खेती करना किसानों के लिए जितना आसान है, इसके सेवन से भी उतने फायदे होते हैं। कुटकी की फसल 65 से 75 दिनों में पक जाती है। कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से लेकर डायबिटीज को कंट्रोल करने में कुटकी (Little Millet) को असरदार माना जाता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की मात्रा भी अधिक होती है।

अन्तरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के अन्तर्गत मिलेटस पर सीएसआईआर की कई प्रयोगशालाओं ने कार्यक्रम आयोजित किये हैं और अन्य प्रयोगशालाओं द्वारा भी ये कार्यक्रम वर्ष पर्यन्त आयोजित किये जाते रहेंगे।

'सुपर फूड'

कुछ सरकारी तथ्य

- 41% मिलेटस उत्पादन के साथ भारत दुनिया में सबसे अव्वल
- 16 तरह के मिलेटस का भारत में होता है उत्पादन, इनमें ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कंगनी आदि शामिल
- 1% प्रतिशत उत्पादित बाजरे का ही वर्तमान में हो पाता है निर्यात
- 5 प्रमुख बाजरा उत्पादक राज्यों में राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात व एमपी प्रमुख
- 12 अरब डॉलर के बाजरे का वर्ष 2025 तक देश में उत्पादन होने का अनुमान

संकलन : मीनाक्षी गौड़
वरिष्ठ अनुवादक
सीएसआईआर-निस्पर

आधुनिक समय में स्वामी विवेकानंद की युवा प्रतीक के रूप में प्रासंगिकता

कविता वर्मा

हर काम को तीन अवस्थाओं में से गुजरना होता है: उपहास, विरोध और स्वीकृति। जो मनुष्य अपने समय से आगे विचार करता है, लोग उसे निश्चिय ही गलत समझते हैं। इसलिए विरोध और अत्याचार हम सहर्ष स्वीकार करते हैं, परन्तु मुझे दृढ़ और पवित्र होना चाहिए और भगवान में अपरिमित विश्वास रखना चाहिए, तब ये सब लुप्त हो जायेंगे।

भारत देश की भूमि पर युगों के अनुरूप ऐसे अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने भारत देश का सीना गर्व से चौड़ा किया है और दुनिया भर में भारत की कीर्ति स्थापित की है. इसके अलावा अपने विचारों से देश को ही नहीं अपितु दुनिया को भी सही मार्ग दिखाया। भारत देश जहाँ गांधी की भूमि है तो वहीं बाबा साहेब अम्बेडकर, भगत सिंह, गुरुनानक देव आदि महान आत्माओं का जन्म भी भारत देश में ही हुआ था. एक ऐसे ही महापुरुष है स्वामी विवेकानंद। वेदान्त के प्रख्यात ज्ञाता माने जाने वाले अध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद का जन्म भारत देश के कोलकाता शहर में हुआ था। बचपन से ही विवेकानंद तीव्र बुद्धि के थे। तैराकी, घुड़सवारी, कुश्ती, संगीत, साहित्य और दर्शन शास्त्र में स्वामी विवेकानंद की काफी रुचि थी।

इसका प्रमाण यह है कि स्वामी विवेकानंद ने बचपन में ही समस्त वेद, पुराण, बाइबल, कुरान, गुरु ग्रन्थ साहिब आदि विचारधाराओं को आत्मसात कर लिया था। तभी उनके विचारों में पारदर्शिता का भाव भी झलकता है। वेदों के ज्ञाता होने अलावा स्वामी विवेकानंद बहुत ही तार्किक बुद्धि वाले व्यक्ति थे। इस के अलावा उनके व्यक्तित्व की एक खास बात यह भी थी कि उनका सम्पूर्ण जीवन हमेशा से ही समाज को समर्पित रहा यहाँ तक कि उन्होंने पैदल चल कर पूरे भारत वर्ष की यात्रा की। वैसे तो स्वामी विवेकानंद का सम्पूर्ण जीवन ही प्रेरक कथाओं से भरा पड़ा है, लेकिन यदि किसी व्यक्ति को अँधेरे में भी अपना रास्ता तलाशना हो तो स्वामी विवेकानंद के शिकागो यात्रा का मात्र एक बार स्मरण भर कर ले। वर्ष 1893 में विश्व धर्म परिषद का आयोजन शिकागो किया गया। यह वह समय था जब

> जब तक लाखों लोग भूखे और अज्ञानी है, तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को गद्दार मानता हूँ, जो उनके बल पर शिक्षित हुआ और अब वह उसकी ओर ध्यान नहीं देता

भारतीयों के पैरों में पराधीनता की बेड़ियाँ थी और उनको दुनिया भर में हीन दृष्टि से देखा जाता था जब स्वामी विवेकानंद उस धर्म परिषद् में सम्मिलित हुए तो सबका बस मात्र एक ही उद्देश्य था कि स्वामी विवेकानंद को उस सम्मेलन में अपनी बात रखने भर का भी मौका न मिले। लेकिन जब स्वामी विवेकानंद को मौका मिला तो उन्होंनें अपने भाषण की शुरुआत ही मेरे ***'अमेरिकी भाइयों और बहनों'*** संबोधन से की। इसके बाद स्वामी विवेकानंद का एक–एक विचार प्रत्येक अमेरिकी के हृदय में बस गया। अमेरिका में स्वामी विवेकानंद के भक्तों का एक समुदाय तैयार हो गया, और उनका वहां हार्दिक अभिनन्दन भी हो गया। स्वामी विवेकानंद 3 वर्षों तक अमेरिका में ही रहे और अपने ज्ञान से अमेरिका को भी सुशोभित किया।

विवेकानंद मूर्ति पूजा को महत्व ही नहीं देते थे। उनका मानना था कि ईश्वर की कोई आकृति नहीं होती है, वह निराकार होता है, ईश्वर का वास कण कण में है, वह इस संसार की प्रत्येक वस्तु में निहित है। आध्यात्म के अतिरिक्त स्वामी विवेकानंद ने समाज को शांति का सन्देश भी दिया और महिलाओं के सम्मान की भी बात की।

भारत देश को स्वामी विवेकानंद के रूप में एक अनमोल हीरे की प्राप्ति हुई है। भले ही वह आज हमारे बीच में नहीं है, लेकिन उनके विचार आज भी समाज के हर भटके हुए व्यक्ति को सही राह दिखा रहे हैं। वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो स्वामी विवेकानन्द के विचारों में युवाओं के सीखने के लिए बहुत कुछ है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर 65 प्रतिशत से भी ज्यादा आबादी युवाओं की है। इनमें से अधिकतर वर्ग ऐसा है जो अपने पथ से विचलित हो जाता है। किसी को अपनी शिक्षा प्राप्ति करने में कठिनाई आती है तो किसी को अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त न कर पाने की वजह से निराशा हासिल होती है, तो कोई युवा क्राइम के रास्ते पर निकल पड़ता है।

ऐसे में स्वामी विवेकानंद के विचार युवाओं में चेतना का प्रसार तो करते ही हैं और साथ ही साथ उनको सही रास्ते भी दिखाते हैं। स्वामी विवेकानंद अपने मंजिल में आई समस्याओं से परेशान होने वाले युवाओं से कहते हैं–

जिस दिन आपके सामने
कोई समस्या न आये
आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि
आप गलत मार्ग पर हैं
बुरी बात यह है कि
समय कम है
अच्छी बात है कि समय है
उठो और तब तक
मत रुको, जब तक
लक्ष्य तक न पहुँच जाओ।

स्वामी विवेकानंद के यह विचार किसी भी हताश, भटके हुए युवक के लिए संजीवनी बूटी से कम नहीं हैं। स्वामी विवेकानंद के विचार सभी के समझने योग्य होते हैं और साथ ही इनका प्रभाव युवाओं पर सबसे ज्यादा होता है। इन्होंने आम बोल चाल की भाषा में ऐसा अमृत्व संसार को दिया है जिसके पास युवाओं की प्रत्येक समस्या का निवारण है। इनके विचारों की प्रभावकारिता को देखते हुए भारत सरकार ने इनके जन्मदिवस अर्थात 12 जनवरी को *''राष्ट्रीय युवा दिवस''* के रूप में मनाने का निर्णय लिया ताकि उनके विचारों को देश के प्रत्येक युवा तक पहुँचाया जा सके और युवा उनके विचारों को ग्रहण करके अपने जीवन की

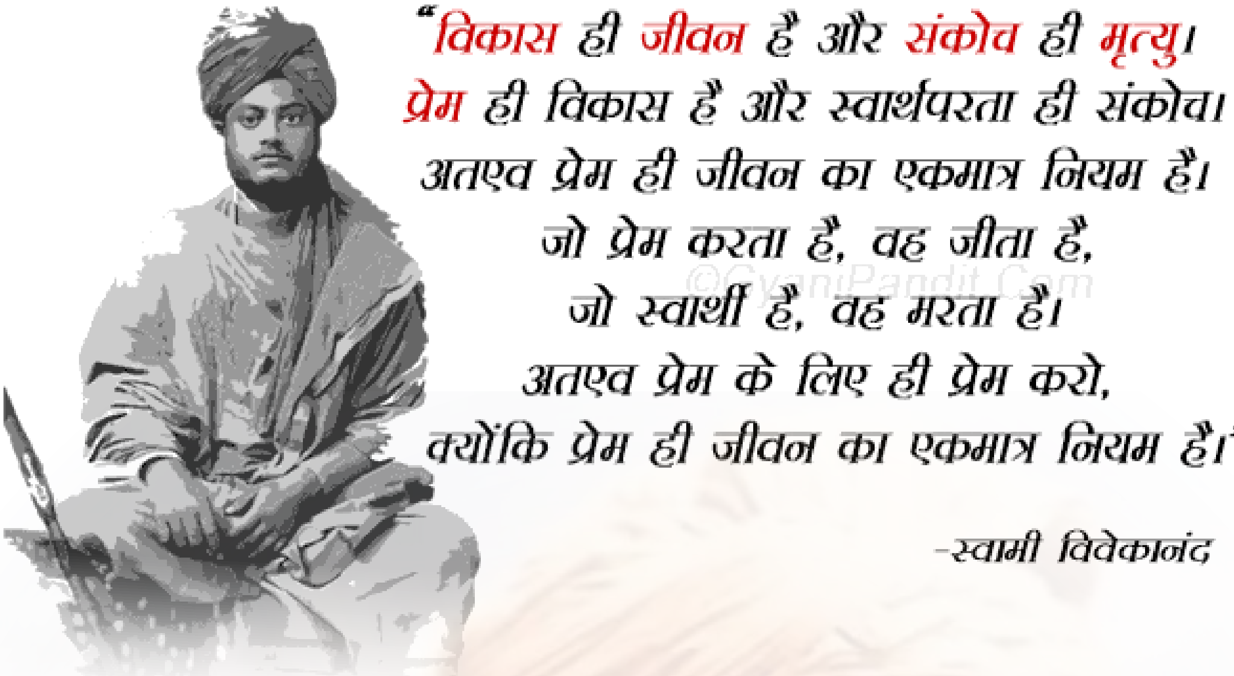

समस्याओं को दूर कर सके।

कहते हैं कि किसी भी देश का युवा उस देश का भविष्य होता है यदि देश को तरक्की करनी है तो युवाओं का दृष्टिकोण सही होना अत्यंत आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद के विचार तो ज्ञान का ऐसा पिटारा जिसमें युवाओं की समस्त समस्याओं का समाधान तो मिलेगा ही और साथ ही साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलेगी। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को एक भारत श्रेष्ठ भारत का भी रास्ता दिखाया है जिस रास्ते पर चलकर भारत सरकार ने भी ***सबका साथ सबका विकास*** की ओर अपना रुख कर लिया। जिस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने विपरीत परिस्थितियों में भी दुनिया भर में भारत के परचम लहराए, दुनिया को शान्ति का पाठ पढाया और अनमोल ज्ञान के भण्डार से भारत को ही नहीं अपितु पूरे विश्व को जगमगाया। उसी प्रकार देश के युवाओं को अपने जीवन का सार्थक उपयोग करना चाहिए। अपने जीवन में देश को त्याग कर देश दुनिया को शन्ति के पथ पर आगे बढ़ाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के प्रत्येक विचार में उनकी हर एक समस्या का समाधान है।

भारत देश ऐसी अनमोल संपदा का मालिक है, जो दुनिया भर को प्रगति के रास्ते पर आगे बढाने में बहुत कारगर है। हमें जो अनमोल उपहार स्वामी विवेकानंद ने दिए हैं उन उपहार का लाभ उठा कर देश के युवाओं को अपना और अपने देश के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए और तब तक प्रयत्न करना चाहिए जब तक वह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते।

स्वामी विवेकानंद की तरह भाईचारे और बंधुत्व की भावनाओं को पूरी दुनिया में प्रतिष्ठित करने का प्रयास करना चाहिए।

आज सम्पूर्ण देश धर्म के नाम पर बंटा हुआ है। लोगों ने अपने आप को मंदिरों, मस्जिदों आदि में बाँट रखा है। किन्तु हम सब जानते हैं कि ईश्वर निराकार है, वह हम सब में विराजमान है, इसलिए हमें उस लड़ाई को खत्म कर परमात्मा के बारे में वास्तविक ज्ञान ग्रहण करने की आवश्यकता है ताकि हमें कोई बहका न सके। वर्तमान समय में युवा काफी भटका हुआ प्रतीत होता है। उसे स्वामी विवेकानंद के जीवन के प्रत्येक विचार, प्रत्येक यात्रा, जीवन शैली को समझने की आवश्यकता है। एक युवा सही रास्ते पर तभी आ सकता है जब उसे वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हो। जब युवाओं को वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति होगी तभी उन्हें कोई बहका नहीं पायेगा, न ही धर्म के नाम पर और न ही कोई लोभ देकर।

कविता वर्मा
पीएच.डी शोधार्थी
सीएसआईआर-निस्पर

रंग

एक तितली मेरे लिए पहाड़ों से लाई सन्देश
कि सुबहें बहुत खाली होती चली जा रही हैं
मद्धिम हो रहा है सूरज
और उसकी लालिमा भी
सूरज की टिकिया कम चमकदार होती चली जा रही है
चली ही जा रही है
और मैं एक आशा में पहाड़ों से तितलियों और सूरज को
देखती रहती हूँ
बच्चे छोटे–छोटे मुझसे पूछते हैं बड़े–बड़े प्रश्न
और निरुत्तरित मैं
विवश हूँ झाँकने को अपने अन्तःकरण के आयतन में
पात्रता विज्ञापनों की मोहताज हुई जा रही
और मैं एक नदी की शक्ल में ढलती जा रही
सवाल बहुतेरे हैं जो मुझे बुरी तरह घेरे हैं
जवाबों की तलाश में यात्रा एक जारी है
मुझे ईमानदार बने रहने की बीमारी है
और ईमानदार होने की आशा ही पूँजी है मेरी
माँ मेरी अभी भी कहती हैं कि तितली देखो बेटा
तितली का रंग नहीं।

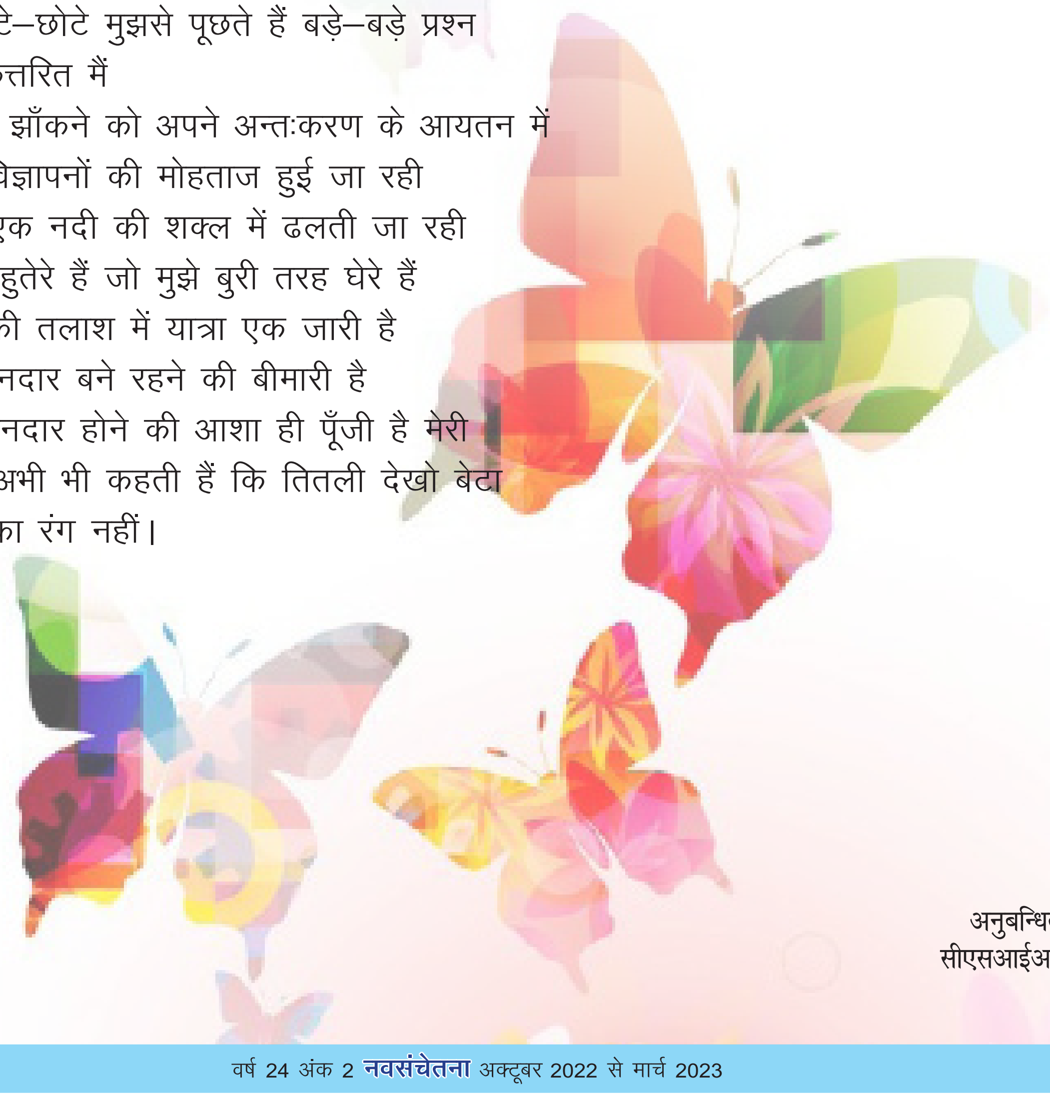

नीलम
अनुबन्धित कार्मिक
सीएसआईआर-निस्पर

'अस्तित्व'

जीवन जितना तेज चला, हम तेज चले संग उसके
मुड़ कर देखा पीछे, कुछ साए हैं जाने किसके ???
आज वक्त है चलो, देख लें कौन हैं ये अनजाने
अरे! भीड़ में कुछ चेहरे तो लगते हैं जाने पहचाने....
एक चेहरा है इसी भीड़ में, कोई अपना लगता है
हंस हंस कर वो देख रहा है, नजर मिली तो छुपता है
देख रहा है हैरत से वो आँखों में ले कई सवाल
चाह रहा है शायद मुझसे, इनके कुछ आसान जवाब

मैंने पूछा कौन हो तुम? लगते हो कोई फरिश्ते
मैं तेरा 'अस्तित्व' हूँ नादां, भूल गया ये रिश्ता
फिर मुस्काया और बोला, मुझे तुझसे नहीं कोई गिला
दुनिया इतनी तेज है, इसमें तेरी नहीं कोई खता
तू तो इसके साथ चला , बस मैं ही पीछे छूट गया
तब से शायद तेरा मेरा रिश्ता खुद ही टूट गया...

मैं बोला, क्या चाहो तुम? कुछ साफ साफ बतलाओ
जो कहना है कह दो यूँ बातो में न उलझाओ
वो बोला तू भूला खुद को, अब तुझको क्या समझाऊँ
पथरा गयी है नजर तेरी, तुझे आईना क्या दिखलाऊँ...
मैं तेरा अंतर्मन, तूने छोड़ दिया जिसे पीछे
दुनिया की इस चकाचौंध में खड़ा है आँखे मीचे

तेरे अरमान, तेरी चाहत, सपने मुझमें बसते हैं
तभी तुझे अब पल पल तन्हाई के साए डसते हैं
आज तू जो है क्या तेरी असली पहचान यही है?
पाँव जमाये है जिस पर, क्या तेरी जमीं वही है?
बदल दे इस दुनिया को तू अपनी पहचान बना
मत बन इसके जैसा मत अपना अस्तित्व गवां......

स्वर्णलता उपाध्याय
तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली

सीमा

मन, कमबख्त यूंही एक दिन कर बैठा एक सवाल
"सीमा"आखिर क्या है, यह बवाल?

"सीमा" देशों की हो तो
इसकी सुरक्षा में दिन रात, गर्मी सर्दी, बारिश
तूफान की परवाह न कर
धीर–वीर पर्वत से तैनात है वीर जवान
जिन्होंने सीमा पर प्राण गवाए
वो शहीद, देशभक्त, मां के सपूत कहलाये
जिनका ध्येय देश की सीमा सुरक्षा

ये शब्द भी क्या खेल खेलते हैं
जब बात हो हम इंसानों की सीमाओं की
तो कितनी अलग अलग परिभाषाएं, गढ़ लेते हैं
यह दो अक्षरों का भारी भरकम शब्द
देवता–शैतान
इंसान–हैवान
स्त्री–पुरुष
अच्छा–बुरा, सही–गलत
जीव–निर्जीव
भावना–शरीर
को परिभाषा दे
बाँध दिया है
इस एक शब्द ने...
पर कैसे तय किया हमने..
किसी के लिए उन्मुक्त गगन
तो कोई रहे चूड़ी बिंदी,
या रोटी की गोलाई में मगन

कितने शक्ति सम्पन्न हैं हम इन्सान
हम तय कर सकते हैं सभी की सीमाएं
हमने बाँट दिया, भूमि को, जल को,
अम्बर को, थल को
बाँध दिया अल्हड नदियों को
इतना ही नहीं
हमने समेट दिया है
सृष्टि रचयिता भगवान को
मंदिर मस्जिद गिरिजाघर
तक सीमित कर दिया
उस सर्वशक्तिमान को...

इंसान ने बाँट दिया है
खुद इंसान को
कभी कर्म से
कभी धर्म से
कभी जाति के झूठे मर्म से
बाँट दिया सारे जहान को
मेरे भारत महान को

स्वर्णलता उपाध्याय
तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली

पुत्री हूं मैं पुत्र नहीं

पुत्री हो तुम, पुत्र नहीं, जीने का तुम्हें अधिकार नहीं,
बेटी हूँ मैं, लाडो हूँ मैं, करो मुझे भी प्यार
पुत्र चिराग है, एक कुल का,
पुत्री रौशन करे दो परिवार।।

पुत्री हो तुम, पुत्र नहीं, विद्या का तुम्हें अधिकार नहीं,
मैत्रेयी हूँ मैं, गार्गी हूँ मैं, मानो मेरा उपकार
देवी सरस्वती के रूप में, नमन करे समस्त संसार।।

पुत्री हो तुम, पुत्र नहीं, खेलकूद का तुम्हें अधिकार नहीं,
स्वाति हूँ मैं, सिंधु हूँ मैं, मैं ही दीपा करमाकर
कांसा रजत तो बहुत जीता, अगला निशाना स्वर्ण पर।।

पुत्री हो तुम, पुत्र नहीं, स्वतंत्र विचारों का तुम्हें अधिकार नहीं,
मलाला हूँ मैं, मैडम क्यूरी भी मैं,
मैं ही कल्पना अंतरिक्ष का सार।
जीर्ण शीर्ण परम्पराओं पर मैंने किया भीषण प्रहार।।

हूँ मैं पुत्री, हूँ मैं बेटी
मैं ही कन्या, मैं ही परिवार
बहुत हुआ प्रश्न मेरे अधिकारों पर, करके तो देखो
मन से सत्कार।।

पन्नाबाई नहीं बचाओगे तो उधम सिंह कहाँ से लाओगे
जीजाबाई नहीं बचाओगे तो शिवाजी कहाँ से पाओगे
अरे ! पुत्री नहीं बचाओगे तो पुत्र कहाँ से लाओगे

डॉ. मोनालिसा पॉल
वरिष्ठ परियोजना सहायक
सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली

योग

आओं मिलकर योग करें,
योग करें और स्वस्थ रहें।
योग से काया रहे निरोग,
मिटे बीमारी जागें लोग।

मम्मी पापा, दादी दादा
बच्चे हो या बूढ़े काका।
सबको योग के गुण बतायें
स्वस्थ सहज मस्तिष्क बनायें।
युग शब्द से बना योगासन
आओ समझें इसके आसन

ब्रहन अर्ध्य में जगे सभी
योगासन फिर करें तभी।
सूर्य नमस्कार है पूर्ण व्यायाम
वज्रासन दर्द से दे आराम
हलासन तंत्र को मजबूत बनाये
देह की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाये
शरीर को मिलती इस से ऊर्जा
जिससे रहते हम तरोताजा
आओ मिलकर फिर से कहें
योग करें और स्वस्थ रहें।

श्री रमेश कुमार
एमटीएस
सीएसआईआर-निस्पर

नारी तू नारायणी

नारी तू नारायणी
आँचल में करुणा और आँखों में पानी
क्या बस यही है तेरी कहानी!
क्यों कहती नहीं कुछ,
नीची क्यों है तेरी वाणी ?
मौका है आज,
सुना दे तू आप बीती अपनी जुबानी

क्या तेरी कोई चाह नहीं,
न ही कोई महत्वाकांक्षा ?
क्यों तू समर्पित है पूरी करने
को हर किसी की आकांक्षा ?
अपने भीतर झांक ज़रा
और अपने अंतस को परख ज़रा
सच बता नारी क्या सचमुच तू नारायणी है?

किसी की बेटी, किसी की बहन,
किसी की पत्नी
और अब तो किसी की माँ
बस क्या यही है तेरा आसमाँ ?
क्यों पंख नहीं तेरे उड़ान भरने को ?
क्यों चित्रपट कोरा है रंग भरने को ?
आखों के कोरों से आँसू क्यों सूखे तेरे ?
क्यों होंठ सिल से गए हैं तेरे ?
क्यों हाथ तेरे लरज रहे,
क्यों जुबां तेरी फिसल रही ?

अरे अब तो आवाज उठा
बता दे जहां को कि तू ही है दुर्गा
लक्ष्मी और सरस्वती भी तू ही
तेरे वजूद से दुनिया है
दुनिया की वजह से तू नहीं!

थोड़ा संबल जुटा और अपने पंख फैला
तेरे हिस्से का आसमां तुझे जरूर मिलेगा
खुशियाँ तेरी मुट्ठी में होंगी
बस खुद पे भरोसा कर
और ये याद रख
नारी तू सच में नारायणी ही है।

डॉ. चारु लता
वरिष्ठ वैज्ञानिक
सीएसआईआर-निस्पर

चाँद का टुकड़ा

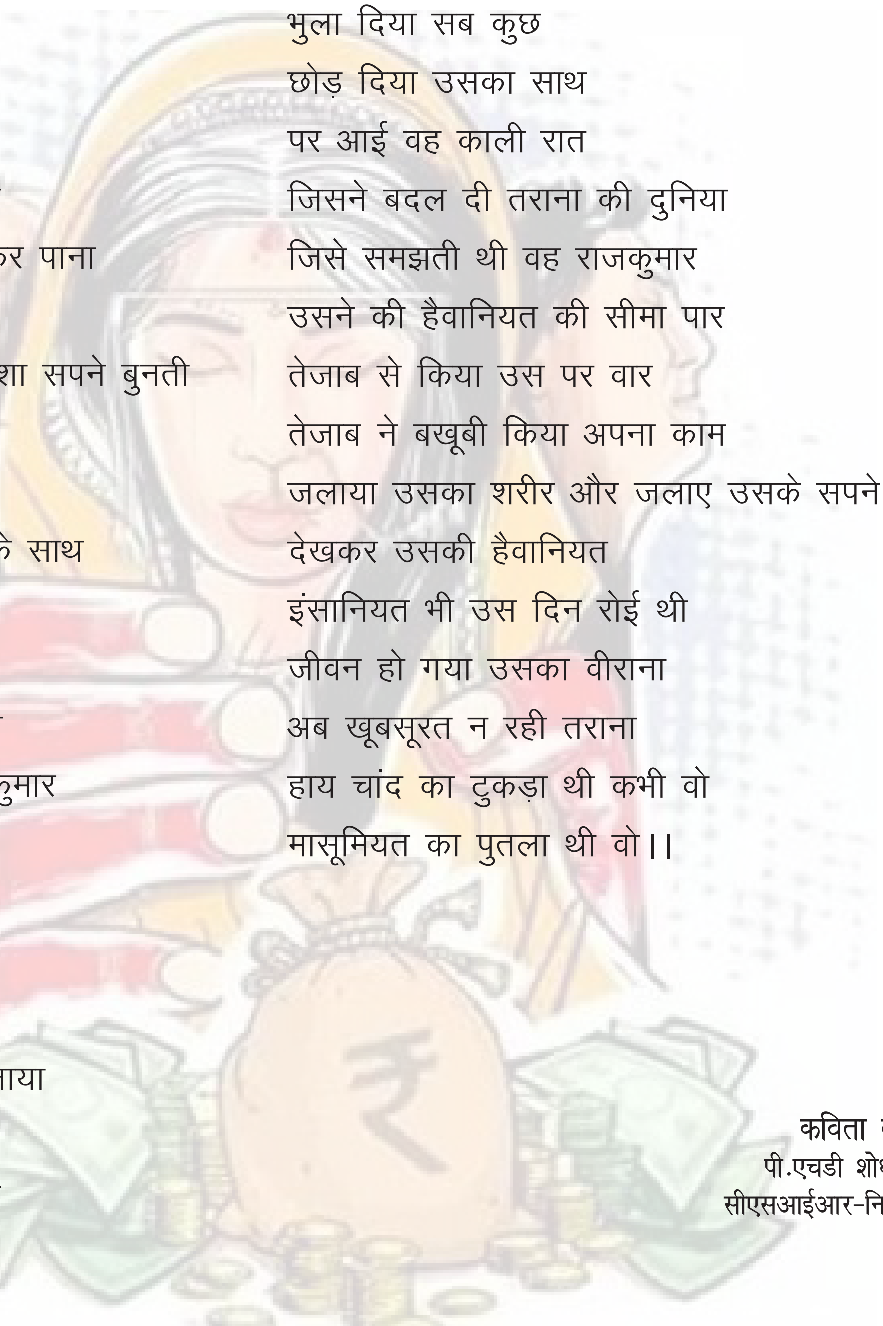

चाँद का टुकड़ा थी वो
मासूमियत का पुतला थी वो
भाई की जान थी वो
घरवालों की शान थी वो
हर लमहे को खुल के जीती
गम में भी खुशी ढूंढ ही लेती
आता था उसे सबको खुश कर पाना
ऐसी थी हमारी तराना
''ताजमहल'' को देखकर हमेशा सपने बुनती
आयेगा कोई राजकुमार
सफेद घोड़े पर सवार
कहती थी उड़ जाऊंगी उसके साथ
आसमान के पार
दुनिया उसे हसीन लगती
हर लमहे को खुल कर जीती
आखिर आ ही गया वो राजकुमार
जिसका उसे था इंतजार
जो चाहा हो गया पूरा
जिंदगी में कुछ न रहा अधूरा
शादी का रिश्ता भी आया
''दहेज'' की मांग भी संग लाया
समझा था जिसे राजकुमार
किया उसने ही सीने पर वार
तोड़ दिये सारे सपने
रह गये साथ सिर्फ अपने
अपनों के साथ करनी चाही नई शुरूआत
भुला दिया सब कुछ
छोड़ दिया उसका साथ
पर आई वह काली रात
जिसने बदल दी तराना की दुनिया
जिसे समझती थी वह राजकुमार
उसने की हैवानियत की सीमा पार
तेजाब से किया उस पर वार
तेजाब ने बखूबी किया अपना काम
जलाया उसका शरीर और जलाए उसके सपने
देखकर उसकी हैवानियत
इंसानियत भी उस दिन रोई थी
जीवन हो गया उसका वीराना
अब खूबसूरत न रही तराना
हाय चांद का टुकड़ा थी कभी वो
मासूमियत का पुतला थी वो।।

कविता वर्मा
पी.एचडी शोधार्थी
सीएसआईआर-निस्पर

मानव तू जाग रे

अगर मन में अंधकार है
तो शिक्षा का दीप जला
मन का अंधकार मिटा
अपो दीपो भवो से
होगा तेरा उद्धार रे
मानव तू जाग रे

शिक्षा का प्रचार कर,
अंधविश्वास पर प्रहार कर
भवसागर को पार कर
इसी में है तेरी जीत रे
मानव तू जाग रे

हृदय को अपने कोमल रख,
असहाय की मदद कर
जगत में होगा तेरा नाम रे,
मानव तू जाग रे

जब श्वास तेरा चला जायेगा,
तब कुछ न कर पायेगा,
जो कुछ कमाया है, उसमें से कुछ दान कर,
समाज का कल्याण कर
मानव तू जाग रे

श्री मोहन लाल
निजी सचिव
सीएसआईआर-निस्पर

रौनो और बरगद का पेड़

मोनालिसा पॉल

रौनो एक दिन पाठशाला से घर जा रहा था। शरद काल का समय था। धूप तेज होने के बावजूद भी उसमें तपिश न थी। रौनो अपने विचारों में डूबा हुआ था कि अचानक उसकी दृष्टि रास्ते के किनारे पर पड़े एक छोटे से बरगद के पौधे पर गई। उसे ऐसा लगा कि मानो वह बरगद का पौधा रौनो की ही प्रतीक्षा कर रहा था। वह भागकर उस के पास गया और उस को प्यार से उठा लिया। बरगद का वह नन्हा सा पौधा अपनी कोमल जड़ों को खो चला था उस बरगद को देखकर ऐसा लगता था कि मानो वह अधमरा सा हो गया है।

रौनो को उसके लिए एक अजीब सा खिंचाव महसूस हुआ। उसने उसके नन्हे कोपलों को प्यार से सहलाया और चल पड़ा। घर जाने से पहले उसने सोचा कि उस बरगद के पौधे को कहीं पर रोपा जाए। उस ने अपने घर से थोड़ी दूर एक जगह ढूंढ़ी और बड़े चाव से मिट्टी खोदकर उस नन्हे से पौधे को धरती पर लगा दिया। रौनो को न जाने क्यों एक अजीब सी खुशी अनुभव हुई। बंसी काका अचानक पीछे से बोले,

"रौनो बरगद लगा रहे हो। अच्छा है। यह कुछ दिनों में तुम्हारे कद से भी लंबा हो जाएगा"। रौनो ने सिर हिला कर हामी भरी। कुछ दिनों बाद सही में वह बरगद का पेड़ लंबा हो चला। रौनो पाठशाला से घर आते समय उसको प्रतिदिन निहारता रहता था।

एक दिन उसी बरगद के पास भीड़ देखकर रौनो सकपका गया। पास जाने पर पता चला कि गांव के कुछ लोग उसे काटने के लिए आतुर हैं।

"अरे! भाई बरगद को काटो। इसमें तो भूत प्रेत का निवास होता है। गाँव में ऊपरी साये की वजह से महामारी भी फैल सकती है"। काटो इसको काटो"।

भीड़ के शोर से विवश होकर रौनो आगे बढकर आया और एकदम से बोल पडा—नहीं, बरगद को कोई नहीं काटेगा। यह हमें छाया देता है यह सौ साल तक जीता है। यह हवा को शुद्ध करता है मैं इसे नहीं काटने दूंगा, चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे काटकर ही इस बरगद को कोई छू पाएगा।

इतने में बंसी काका समर्थन में आ खडे हुए भीड छट गयी। रौनो के प्रबल विश्वास के सामने एक एक कर सभी गाँव वाले घर चले गए। रौनो खडा रहा और सोचने लगा कि एक दिन यह बरगद का वृक्ष इस गाँव में हरियाली लाएगा और तभी गाँववालों को इस की कद्र अवश्य होगी। बरगद खूब बड़ा और खूब फला।

डॉ. मोनालिसा पॉल
वरिष्ठ परियोजना सहायक
सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली

सब हो जाएं एक

संदेश नायक

गुरु ने शिष्य को अंतिम उपदेश देते हुए कहा–

"समस्त विश्व के कल्याण हेतु कर्म कर। सबको सम-दृष्टि से देख, एकीभाव में स्थित होकर भेद करने की क्षमता का लोप कर दे क्योंकि यही अज्ञान का, मोह का कारण है"

"ये कैसे संभव है? मैं दो भिन्न वस्तुओं, दो भिन्न प्राणियों को एक ही दृष्टि से देख ही कैसे सकता हूँ? उनमें भेद करने की शक्ति चाहकर भी मेरे अंदर से लुप्त कैसे हो सकती है? आम के प्रति मेरे मन में जो अनुराग है, वो नीम के प्रति कैसे हो सकता है? एक व्यक्ति जो मुझे प्राणों से भी प्रिय है और एक व्यक्ति जिसके प्राण लेने को मैं आतुर हूँ, उनको मैं एक ही दृष्टि से, सम-भाव से कैसे देख सकता हूँ?" शिष्य ने अपनी शंका स्पष्ट करते हुए पूछा।

गुरु–"एक प्रसंग सुनाता हूँ, यदि तू उसका मर्म समझ गया तो तेरे ये सारे संशय आप ही मिट जाएंगे। सुनो–

नीलकंठ पक्षी मुझे बचपन से प्रिय थे। किसी से सुन लिया था कि ये शिव जी के दूत हैं जो हमारी खबर उन तक पहुंचाते हैं। मैं भी नीलकंठ को देखकर लोगों से सुनी वही पंक्तियाँ दुहरा देता हूं–

'नीलकंठ तुम नीले रहियो,
हमाई खबर भगवान को दइयो,
साँची होए तो उड़ जइयो, झूठी होए तो बैठे रहियो।'

बाल–मन के अटल–अतार्किक–निश्छल–कोमल विश्वास। बस तभी से मैं नीलकंठ को जब भी कहीं बैठे देखता तो अपनी सारी इच्छाएं, दुःख–सुख उसे सुना डालता। इस आशा में कि वो ईश्वर तक मेरी खबर पहुंचा देगा। संयोगवश वो उड़ भी जाता।

समय के साथ जैसे सबको पता चलता है वैसे ही एक दिन मैं इस सत्य से अवगत हुआ कि हम सबको मर जाना है। मृत्यु समस्त प्राणियों की अंतिम परिणति है। मैं भयभीत हो गया। भय अपनी मृत्यु का नहीं, वरन अपनों से बिछड़ जाने का था। तब से अपने माँ–बाप, भाई–बहिन सबको देखकर मैं दुखी हो जाता। मृत्यु की छाया मुझे उनके सर पर मंडराते हुए दिखती, ये अहसास कराते हुए कि एक दिन मेरे ये करीबी, मेरे जीवनाधार

मुझसे छीनकर एक अज्ञात स्थान पर बलात ले जाएंगे और मुझे उनकी स्मृतियों में तड़पने के लिए छोड़ दिया जायेगा। मैं मोह का मारा, दुःख से व्याकुल अक्सर रातों को सुबकते–सुबकते सोता।

एक सुबह मैंने देखा, एक नीलकंठ झरोखे पर बैठा मुझे निहार रहा है। मैं एक सांस में उसे अपनी सारी व्यथा–कथा सुना गया। लेकिन नीलकंठ नहीं उड़ा। मैंने बारंबार उससे उड़ जाने की विनती की लेकिन वो टस से मस न हुआ। उन दिनों मैं जिस मनोस्थिति से गुजर रहा था उसमें अपनी भावनाओं का ये अपमान मुझसे सहन नहीं हुआ। मैंने क्रोध में, विवेकशून्य हो एक पत्थर उस नीलकंठ को दे मारा। वो तड़पकर नीचे गिरा और उसने अंतिम शब्द कहे– सब हो जाएँ एक। आश्चर्य कि उसने मेरी भाषा में ये शब्द कहे। मैं घबराया माँ के पास अपना पाप बताने पहुंचा लेकिन मेरे देखते–देखते माँ एक नीलकंठ में परिवर्तित हो गई। फिर पिताजी, भाई–बहिन भी मेरे सामने एक ही रंग–रूप–आकार के नीलकंठों में परिवर्तित होते चले गए। अब वो चारों एक ही नीलकंठ की शत–प्रतिशत अनुकृति लग रहे थे, जिनमें कोई भेद कर पाना असंभव था।

मुझे बहिन से बड़ा स्नेह था, भाई से नोंक–झोंक होती रहती थी, पिता से डरता था और माता का लाड़ला था। लेकिन अब ये भेद मिट चुका था। अब मैं उन चारों को माँ–बाप, भाई–बहिन के रिश्तों में वर्गीकृत नहीं कर सकता था क्योंकि भेद करने का आधार, उनकी पहचान, उनके समरूप होने के कारण मिट चुकी थी। अब उन चारों के प्रति मेरे मन में एक ही भाव था–प्रेम का। तभी वो चारों उड़कर घर के बाहर चले गए, पीछे–पीछे मैं भी बाहर आया तो देखता हूँ कि मोहल्ले वाले एक–एक कर उन चारों के रंग–रूप–आकार वाले नीलकंठों में परिवर्तित होते जा रहे हैं और फिर सारे नीलकंठ आपस में मिलकर एक झुण्ड बनाकर बैठ गए। मेरे घर के चारों सदस्य उस झुण्ड में खो चुके थे। अब उनमें से किसी को भी पहचान पाना मेरे लिए संभव नहीं था। मोहल्ले के कई लोगों के प्रति मेरे मन में द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या थी, तो कईयों के प्रति प्रेम, दया, सहानुभूति भी थी। लेकिन अब ये भेद नहीं रहा। वो सारे अब मेरे परिवार का ही हिस्सा हो गए थे। उस झुण्ड के हर नीलकंठ के प्रति मेरे मन में एक ही भावना रह गई थी– प्रेम की, क्योंकि उन्हें पहचानने की शक्ति का मेरे अंदर से लोप हो चुका था, सबके एक ही रंग–रूप–आकार का होने के कारण। अब उस झुण्ड में से हर नीलकंठ मुझे अपने माता–पिता, भाई–बहिन ही लग रहे थे, सब एक से जो थे।

उसके बाद इस पूरी सृष्टि में, मैं जहाँ–जहाँ भी गया, सारे प्राणी उन नीलकंठों के समरूप परिवर्तित होते हुए उसमें मिलते चले जाते। अब मैं उस मरते हुए नीलकंठ के अंतिम शब्दों ***'सब हो जाएँ एक'*** का रहस्य समझा। मेरे लिए सृष्टि में सारे प्राणी एक हो चुके थे और मेरी दृष्टि सम हो गई थी। तभी मेरी नींद खुल गई। मैं स्वप्न में था। लेकिन तब से मोह का कोहरा मेरे मन से छट गया और मैं एकीभाव में स्थित होकर ये जीवन जीने लगा। ऐसे मैंने ईश्वर को कण–कण में देखा। जैसे उन सारे नीलकंठों में मैंने अपने परिवार के प्यारे सदस्यों को देखा था।"

और शिष्य ने देखा कि गुरु जी एक नीलकंठ में परवर्तित हो चुके हैं और स्वयं वो भी एक नीलकंठ बन चुका है। उसने अपने पंख फड़फड़ाए और अनंत आकाश की ओर उड़ चला। आकाश, चाँद, सूरज, तारे, धरती, हवा, पानी, प्रकृति और ईश्वर जो किसी से कोई भेदभाव नहीं करते, जो सबको एक ही दृष्टि से देखते हैं।

निष्कर्ष– सबके प्रति समानता का भाव रखा जाए, सबको एक ही दृष्टि से देखा जाए तभी हम धर्म, जाति, समुदाय की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठ सकते हैं। यही जीवन का, मानवता का और हमारे संविधान का मूल–मंत्र है।

संदेश नायक
पति श्रीमती स्वर्णलता उपाध्याय
सीएसआईआर-निस्पर

सीएसआईआर-निस्पर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'

सीएसआईआर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका ''विज्ञान प्रगति'' ने एक नया इतिहास रच दिया है। इस पत्रिका को राष्ट्रीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम स्थान) प्राप्त हुआ है और यह पुरस्कार पंडित दीन दयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत में 14–15 सितंबर 2022 के दौरान आयोजित दूसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रदान किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जिसे लगभग 9000 दर्शकों ने देखा।

सूरत राजभाषा सम्मेलन में सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर –निस्पर), नई दिल्ली की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की उपस्थिति में यह प्रतिष्ठित कीर्ति पुरस्कार ग्रहण किया। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र भाई पटेल और गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा और श्री निसिथ प्रमाणिक ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

'विज्ञान प्रगति' (हिंदी में एक लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका) भारत की सबसे लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं में से एक है। यह बच्चों, शिक्षकों, शोधकर्ताओ और भारत के साथ–साथ दुनिया भर की जनता के बीच लोकप्रिय है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने वर्ष 1952 में इस पत्रिका को प्रकाशित करना शुरू किया। इसमें सात दशकों की विरासत है और इन वर्षों में, इस पत्रिका के पाठक इसमें प्रकाशित सामग्री से प्रेरित हुए हैं। हिन्दी के इस मासिक प्रकाशन में हाल के राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित विकास, खोज, आविष्कार, लेख, फीचर, विज्ञान कथा, विज्ञान कविता, प्रश्नोत्तरी, साइंटून (विज्ञान कार्टून) और डॉक्यूड्रामा के रूप में तकनीकी प्रगति के बारे में जानकारी दी जाती है।

विज्ञान प्रगति का उद्देश्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सरल भाषा में जन–जन तक पहुँचाना है। पत्रिका की विषयवस्तु का उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा को जगाना और विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए उनमें रुचि विकसित करने का प्रयास करना है। जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे हुए हैं, वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में प्रामाणिक जानकारी के स्रोत के रूप में इस पत्रिका का उपयोग करें।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 ए पर जोर दिया और कहा कि प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक स्वभाव, अनुसंधान की भावना, मानवतावाद और सुधार के बारे में जानकारी का विस्तार करे। विज्ञान पत्रिकाएं आम आदमी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उनमें वैज्ञानिक स्वभाव का विकास करती हैं।

इस महान अवसर पर सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने कहा कि 'विज्ञान प्रगति' को राजभाषा राष्ट्रीय कीर्ति पुरस्कार सीएसआईआर के साथ–साथ इसके सभी पाठकों, लेखकों और संपादकों का सम्मान है।

आयुष मंत्रालय और सीएसआईआर-निस्पर ने आयुर्वेद @2047 पर एक विशेष सत्र का आयोजन किया

नई दिल्ली स्थित केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद) डॉ. अमित ने सीएसआईआर-निस्पर की ओर से आयुर्वेद@2047 पर आयोजित विशेष सत्र में अपना एक मुख्य व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा, सन्तुलित आहार, खूब पानी पीना, पर्याप्त नींद, शारीरिक काम और मानसिक संतुलन स्वस्थ जीवन जीने के प्रमुख कारक हैं। आयुर्वेद शरीर, इंद्रियों, मस्तिष्क और आत्मा का विज्ञान है। यह ज्ञान का एक विषय है, जिसका सीधा संबंध मानव स्वास्थ्य और कल्याण से है।" उनके व्याख्यान की विषय वस्तु ''वृद्ध-जनों और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने के साथ स्वस्थ रहने के लिए आयुर्वेद के मूल सिद्धांत'' पर थी।

यह कार्यक्रम आयुष मंत्रालय की ओर से वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली के सहयोग से 11 अक्टूबर, 2022 को आयोजित किया गया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति मानव स्वास्थ्य की समग्र अवधारणा में शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के सामंजस्य की बात करती है और यह भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली की प्रमुख विशेषता है। इसके अलावा प्रोफेसर अग्रवाल ने सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित सामाजिक पारंपरिक ज्ञान (स्वास्तिक) कार्यक्रम के हालिया योगदान का भी उल्लेख किया। उन्होंने इस कार्यक्रम से प्राप्त सह-संबंध व अंतदृष्टि प्रदान कीं, जो हमारे देश के आयुर्वेद और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को मूल्यवान बनाते हैं। सीएसआईआर-निस्पर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुमन रे ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस कार्यक्रम का संचालन श्री अनिरुद्ध तिवारी ने किया। इस विशेष सत्र के बाद भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने एक निशुल्क चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया। इसमें मंत्रालय के आयुर्वेद विशेषज्ञों ने सीएसआईआर-निस्पर से जुड़े कर्मचारियों को चिकित्सा परामर्श प्रदान की।

सीएसआईआर-निस्पर में हिंदी माह 2022 का आयोजन

हिंदी दिवस (14 सितंबर) के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 1 से 30 सितंबर 2022 की अवधि में "हिंदी माह" मनाया गया, जिसका उद्घाटन समारोह दिनांक 02.09.2022 को पूर्वाह्न 10:30 बजे आयोजित किया गया।

इस अवसर पर एक परस्पर परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य संस्थान के कार्मिकों को हिन्दी में अपना वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक कार्य करने में आने वाली समस्याओं तथा उनके समाधानों पर चर्चा तथा चर्चा में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों की इस विषय पर व्यक्तिगत राय लेना था। इस विषय पर सभी लोगों ने खुलकर चर्चा की तथा अपने मत व्यक्त किए।

हिन्दी को संस्थान में बढ़ावा देने के लिए कार्मिकों ने भाँति भाँति के सुझाव दिये जिसमें कुछ प्रमुख हैं– हिन्दी को औपचारिकता के दायरे से बाहर लाना, स्वयं से आरंभ करना, हिन्दी के साथ साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव, सम्प्रेषण के महत्व को समझना, भाषा को रोजगार से जोड़ना, तिमाही कार्यशालाओं का नियमित आयोजन, मौलिक लेखन हिन्दी में करना आदि।

इस अवसर पर श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि मातृभाषा से बढ़कर कुछ भी नहीं है और हमारी प्रारम्भिक भाषा के रूप में हिन्दी सर्वत्र उपस्थित है। भाषा की प्रकृति पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है इसमें हम जो बोलते हैं वही लिखते हैं। उन्होंने जोर दे कर कहा कि हिन्दी प्रयोग संबंधी भारतीय संविधान का अनुच्छेद 351 दंडात्मक नहीं है, यह तो हमारी सामासिक अभिव्यक्ति का प्रतीक है। उन्होंने आगे कहा कि हमें भाषा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए तथा हिन्दी में ही बात और संवाद करना चाहिए। यह हिन्दी को आगे बढ़ाने का एकमात्र असरदायक तथा प्रभावशाली उपाय है।

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री हसन जावेद खॉ, मुख्य वैज्ञानिक, पीएसडी तथा प्रभारी राजभाषा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि

संस्थान ने अभी हाल ही में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है जो सम्पूर्ण संस्थान के लिए गौरव की बात है।

इस उपलब्धि के लिए उन्होंने संस्थान के सभी कार्मिकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सभी के सहयोग से यह संभव हो पाया है। साथ ही उन्होंने हिंदी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ ही उन्होंने हिंदी माह को सफल बनाने के लिए सभी कार्मिकों से अपील की।

हिंदी माह के दौरान संस्थान के नियमित कार्मिकों तथा एसीएसआईआर के विद्यार्थियों और विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत परियोजना स्टाफ के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गयाः कंप्यूटर पर हिंदी में टंकण प्रतियोगिता सामान्य ज्ञान /अंग्रेजी–हिंदी शब्दावली प्रतियोगिता, हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता; हिंदी में पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण और चित्रलेखन प्रतियोगिता आदि।

दिनांक 28.09.2022 को पूर्वाह्न 11 बजे विवेकानंद कक्ष में 'हिंदी माह समारोह' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के संयुक्त सचिव (प्रशा.) श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन में सीएसआईआर–निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल जी ने संस्थान में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया। इस संबंध में उन्होंने विशेष उल्लेख किया कि सीएसआईआर-निस्पर (पूर्व पीआईडी) द्वारा पिछले 70 वर्षों से हिंदी में प्रकाशित की जा रही एक मात्र विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' को 14 सितंबर 2022 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया है।

श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्रशा.) ने अपने अतिथीय सम्बोधन में बताया कि हिन्दी में काम करना बहुत सरल है तथा हमें अपना सरकारी कार्य हिन्दी में करने से परहेज नहीं करना चाहिए।

इस अवसर पर उन्होंने संस्थान की राजभाषा छमाही पत्रिका नवसंचेतना के नवीनतम अंक का विमोचन भी किया। संस्थान के विभिन कार्मिकों को हिन्दी प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने के लिए पुरस्कृत किया गया।

उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं में एक–एक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार और दो–दो प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त, पिछले एक वर्ष अर्थात दिनांक 01.09.2021 से 31.08.2022 की अवधि में सीएसआईआर–निस्पर में सरकारी कार्य (प्रशासन, वित्त एवं लेखा और भंडार एवं क्रय संबंधी) मूल रूप से हिंदी में करने वाले (वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द या उससे अधिक शब्द हिंदी में लिखने हेतु) पात्र अधिकारियों/ कर्मचारियों को नियमानुसार 'राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार' और वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी में कार्य (किसी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पत्रिका में हिंदी में अपना पेपर या लेख प्रकाशित कराना, राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में हिंदी में अपना पेपर या लेख प्रस्तुति करना और अन्य प्रकार के कार्य) करने वाले वैज्ञानिकों/ तकनीकी स्टाफ को 'विशिष्ट प्रोत्साहन पुरस्कार' प्रदान किए गए। श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक महोदय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-निस्पर ने छात्र-वैज्ञानिक कनेक्ट कार्यक्रम का आयोजन किया

वैज्ञानिक अनुसंधान मानवता की सेवा के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। विज्ञान की कोई सीमा नहीं है और वैज्ञानिक होने के लिए जुनून एक शर्त है। पथ-प्रदर्शक खोजों और आविष्कारों के माध्यम से, वैज्ञानिक आम जनता की चुनौतियों का समाधान करते हैं।

सीएसआईआर- राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने सीएसआईआर–निस्पर द्वारा आयोजित छात्र-वैज्ञानिक कनेक्ट प्रोग्राम में अपने उद्‌घाटन भाषण के दौरान इन विचारों को साझा किया। यह कार्यक्रम सीएसआईआर के जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किया गया था जिसमें जयपुर, राजस्थान के 33 स्कूली छात्रों ने 3 नवंबर, 2022 को निस्पर, पूसा परिसर, नई दिल्ली का दौरा किया।

छात्रों के साथ बातचीत करते हुए, प्रो. अग्रवाल ने बुनियादी विज्ञान में करियर बनाने के महत्व पर जोर दिया और छात्रों को अपने स्वयं के वैज्ञानिक और शैक्षणिक करियर के अनुभवों से मंत्रमुग्ध कर दिया।

उन्होंने बताया कि कैसे स्वदेशी समाधान विकसित करके देश की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। उन्होंने छात्रों को भी इसके बारे में भावुक होने के लिए प्रोत्साहित किया। आगे अपने संबोधन में, प्रो. अग्रवाल ने कुछ प्रमुख उदाहरणों का हवाला दिया कि कैसे सीएसआईआर-निस्पर संचार नीति अनुसंधान का एक अनूठा मंच है जो वैज्ञानिक घटनाओं में जनता की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और इसी तरह के आधार पर, उन्होंने छात्रों को वर्तमान और भविष्य में भाग लेने के लिए कहा।

सीएसआईआर की जिज्ञासा पहल के अंतर्गत आयोजित छात्र-वैज्ञानिक कनेक्ट कार्यक्रम के दौरान सीएसआईआर–निस्पर के पूसा कैम्पस में राजधानी स्कूल, कंवरपुरा, जयपुर के शिक्षकों के साथ विज्ञान के छात्रों (कक्षा 11–12 वीं) की मेजबानी की गई। छात्रों को सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान और उन प्रौद्योगिकियों से परिचित कराया गया जो हमारे दैनिक जीवन की गतिविधियों का एक हिस्सा हैं और उन्हें ऐसे एस एंड टी नवाचारों का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया जो राष्ट्र निर्माण में योगदान करते हैं।

श्री सी.बी सिंह, प्रमुख, जिज्ञासा, सीएसआईआर –निस्पर के प्रशिक्षण और मानव संसाधन प्रभाग

ने जिज्ञासा के छात्र-वैज्ञानिक कनेक्ट कार्यक्रम के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की।

उन्होंने बताया कि कैसे जिज्ञासा पूरे देश में विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के सहयोग से व्याख्यान, वेबिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों के बीच वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देने में योगदान देता है।

श्री सिंह ने हाल ही में लॉन्च किए गए सीएसआईआर ऑनलाइन वर्चुअल लेबोरेटरी पोर्टल के महत्व पर जोर दिया जो मानव की रोजमर्रा की गतिविधियों को चलाने वाली वैज्ञानिक घटना और अनुप्रयोगों के लिए सरलीकृत स्पष्टीकरण प्रदान करता है।

श्री आर.एस. जयसोमू , मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर निस्पर ने विज्ञान संचार में करियर से संबंधित अपनी बहुमूल्य वार्ता के साथ चर्चा को और आगे बढ़ाया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे सीएसआईआर-निस्पर समाज को वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करने में काम करता है और इस प्रकार यह एक अद्वितीय सीएसआईआर संस्थान है जो देश में शीर्ष सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित संगठनों में से एक है।

उनके भाषण ने छात्रों को सीएसआईआर-निस्पर पत्रिकाओं 'विज्ञान प्रगति' और 'साइंस रिपोर्टर' से भी परिचित कराया। श्री जयसोमू ने छात्रों को 'वेल्थ ऑफ इंडिया' विश्वकोश के बारे में भी जागरूक किया जो भारत के वनस्पतियों, जीवों और खनिज भंडार के विशाल ढेर से संबंधित प्रामाणिक ज्ञान प्रदान करता है।

डॉ. सुमन रे, प्रधान वैज्ञानिक और पीआई-जिज्ञासा, सीएसआईआर-निस्पर ने वर्ष 1942 में सीएसआईआर की स्थापना होने के बाद से विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं की उपलब्धियों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी।

इसके बाद छात्रों ने परिसर में स्थित प्रिंटिंग सेक्शन, रॉ मेटेरियल हर्बेरियम और संग्रहालय सुविधाएं, अयूर वाटिका, लोकप्रिय विज्ञान विभाग का दौरा किया।

इस अवसर पर निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने सभी आने वाले छात्रों को विज्ञान प्रगति पत्रिका का विशेष अंक वितरित किया और छात्रों को भागीदारी के प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया।

सीएसआईआर-निस्पर ने फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 का आयोजन किया

राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की एक घटक प्रयोगशाला है जो नीति अनुसंधान और विज्ञान संचार संबंधी अध्ययनों के अपने अधिदेशों के साथ राष्ट्र की सेवा करती है।

भारत सरकार के *'फिट इंडिया मिशन'* को मजबूत करने के लिए, सीएसआईआर-निस्पर ने 2-31 अक्टूबर 2022 के दौरान *''फिट इंडिया''* गतिविधियों' का आयोजन किया। इस प्रयास के तहत कई खेल गतिविधियां निर्धारित की गई।

डॉ. सुजीत भट्टाचार्य, प्रभारी निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने *'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0* को पूसा परिसर से सुबह 10:30 बजे हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

सीएसआईआर-निस्पर ने अपने स्टाफ सदस्यों, प्रोजेक्ट एसोसिएट, रिसर्च इंटर्न, एसीएसआईआर छात्रों, आउटसोर्स जनशक्ति, दोस्तों और परिवार के सदस्यों के लिए 3 किलोमीटर की दूरी की 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' का आयोजन किया।

इस अवसर पर डॉ. भट्टाचार्य का कहना था कि फिट इंडिया रन स्वास्थ्य और फिटनेस के लिए संस्थान के स्टाफ सदस्यों और अन्य मानव संसाधनों को जागरूक करने का एक अभिनव प्रयास है।

फिट इंडिया मिशन के लिए सीएसआईआर-निस्पर समिति के अध्यक्ष श्री अश्वनी कुमार ब्राह्मी ने फिट इंडिया फ्रीडम रन के सभी प्रतिभागियों को सरकार के इस रन से संबंधित दिशा निर्देशों के बारे में जानकारी दी। संस्थान की इस गतिविधि में डॉ. मोहम्मद रईस, डॉ नरेश कुमार, डॉ एल पुलाम्ते, डॉ बी एल गर्ग, श्रीमती संध्या वाकडीकर, डॉ मधुलिका भाटी, डॉ सुमन रे, डॉ पुष्पांजलि त्रिपाठी, डॉ शिव नारायण निषाद, डॉ अरविंद मीणा, डॉ मनीष मोहन गोरे, डॉ मेहेर वान, डॉ परमानंद बर्मन (सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक), श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक, श्री अजय कुमार, वित्त और लेखा नियंत्रक, श्री पंकज गोस्वामी, प्रशासनिक अधिकारी और संस्थान के अन्य स्टाफ सदस्यों ने इस फिट इंडिया रन में सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतिभागियों की संख्या 200 से अधिक थी। सीएसआईआर-निस्पर खेल गतिविधियों में बहुत सक्रिय है और यह आंतरिक खेल गतिविधियों के साथ–साथ शांति स्वरूप भटनागर मेमोरियल टूर्नामेंट (एसएसबीएमटी) में भी नियमित रूप से भाग लेता है। एसएसबीएमटी, सीएसआईआर स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड द्वारा एक प्रतिबद्ध सीएसआईआर परिवार बनाने और सभी बाधाओं के खिलाफ उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए टीम भावना, नेतृत्व और उत्साह पैदा करने के लिए विभिन्न सीएसआईआर सं. स्थानों की भागीदारी को एक साथ लाने के लिए बनाया गया एक मंच है। एसएसबीएमटी के तहत क्रिकेट, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज, कैरम और ब्रिज के खेलों में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

सीएसआईआर-निस्पर एसएसबीएमटी का एक सक्रिय सदस्य है।

सीएसआईआर-निस्पर ने अपना दूसरा स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–निस्पर), नई दिल्ली ने 13 जनवरी 2023 को अपना दूसरा स्थापना दिवस मनाया। सीएसआईआर–निस्पर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की मौलिक प्रयोगशाला है।

सीएसआईआर–निस्पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सीएसआईआर के दो संस्थानों सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सीएसआईआर–निस्केयर) तथा राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान (सीएसआईआर–निस्टैड्स) के विलय के साथ 14 जनवरी 2021 को अस्तित्व में आया था। तब से, सीएसआईआर–निस्पर लगभग 80 वर्षों की समृद्ध विरासत और तत्कालीन संस्थानों की एक मजबूत अंतर्निहित क्षमताओं का उपयोग करते हुए, विज्ञान नीति, अनुसंधान और विज्ञान संचार के क्षेत्र में विश्व स्तर पर सम्मानित संस्थान बनने की दिशा में अपने कार्यों को निर्देशित करने में सक्षम रहा है। अपने प्रयासों के माध्यम से नए संस्थान ने विभिन्न हितधारकों के बीच विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार (एसटी और आई) नीति अध्ययन और विज्ञान संचार को बढ़ावा देने के लिए बड़े कदम उठाए हैं तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्योग और समाज के इंटरफेस पर एक सेतु के रूप में कार्य किया है।

स्थापना दिवस समारोह में सीएसआईआर–निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने अपने स्वागत भाषण में सीएसआईआर–निस्पर की शक्ति और समृद्ध विरासत की चर्चा की। उन्होंने कहा, ''हमें अपनी गतिविधियों को समाज के लिए वास्तविक, स्पष्ट और उपयोगी बनाने के लिए उनमें तेजी लाते रहना चाहिए।''

आईआईटी बॉम्बे में भौतिकी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर और सीएसआईआर–निस्पर की अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर बी.एन. जगताप ने स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा कानून 1835 से

लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तक भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास का चित्रण किया। उनका व्याख्यान विचारोत्तेजक होने के साथ–साथ प्रेरक भी था।

इस विशेष अवसर पर कई वैज्ञानिक प्रकाशन जारी किए गए।

जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (जेएसआईआर) का विशेष अंक 'इंडस्ट्री 4.0: ए वे फॉरवर्ड फॉर सेल्फ–रिलायंस एंड सस्टेनेबिलिटी' पर केंद्रित था। टीआरएल असेसमेंट बुलेटिन, समारोह के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रश्नोत्तरी: आजादी का अमृत महोत्सव' नामक पुस्तक, 'भारतीय परंपराओं का खजाना' नामक फ्लिप–पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

इस अवसर पर स्वस्तिक फोटोग्राफी प्रतियोगिता के विजेताओं के नामों की घोषणा की गई। प्रतियोगिता का आयोजन वर्ष 2022 में किया गया था।

स्थापना दिवस समारोह के दौरान, सीएसआईआर–निस्पर के पीएचडी छात्रों ने पोस्टर प्रस्तुति के माध्यम से अपने शोध और निष्कर्षों को प्रदर्शित किया।

डॉ. योगेश सुमन, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–निस्पर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीएसआईआर-निस्पर ने 22 भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार पर चर्चा करने के लिए राष्ट्रीय विचार-मंथन बैठक का आयोजन किया

सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–निस्पर), नई दिल्ली ने 10 जनवरी 2023 को सभी 22 भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार प्रयासों पर एक राष्ट्रीय स्तर की मंथन बैठक का आयोजन किया। यह बैठक हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई थी।

मंथन बैठक की शुरुआत सीएसआईआर–निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक श्री हसन जावेद खान के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने इस महत्वपूर्ण बैठक में शामिल होने के लिए सभी विशेषज्ञों का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने सीएसआईआर–निस्पर और अन्य संगठनों द्वारा किए जा रहे विज्ञान संचार के कई प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने अछूती भाषाओं, दूर–दराज के क्षेत्रों, अनछुए विषयों और विज्ञान के प्रसार के लिए संचार के माध्यमों में विज्ञान संचार के महत्व को भी संबोधित किया और कहा कि अभी भी हमें मीलों आगे जाना है।

विचार मंथन बैठक में भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार के विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। इसके अलावा डॉ. मनीष मोहन गोरे, वैज्ञानिक, सीएसआईआर–निस्पर ने विचार–मंथन बैठक की कार्यसूची और रूपरेखा प्रस्तुत की। डॉ. गोरे सीएसआईआर–निस्पर के लिए भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार पर केंद्रित परियोजना के प्रधान अन्वेषक हैं। उन्होंने संबंधित भाषाओं में विज्ञान के संचार की स्थिति, उपलब्धियों, चुनौतियों और संभावित समाधानों पर चर्चा की। भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय विज्ञान साहित्य के विकास की रूपरेखा पर भी उनके द्वारा चर्चा की गई, विशेषकर उन भाषाओं में जिनमें तुलनात्मक रूप से कम साहित्य है।

इस मंथन बैठक में सभी 22 भारतीय भाषाओं (असमिया, बंगाली, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू) के संचार विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया और उन्होंने चर्चा की और इन भाषाओं में विज्ञान संचार और लोकप्रिय विज्ञान साहित्य के विकास के लिए प्रशंसा, प्रोत्साहन और प्रोत्साहन की योजनाओं का सुझाव दिया। ये 22 आधिकारिक भाषाएँ भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में सूचीबद्ध हैं।

यह बैठक सीएसआईआर–निस्पर की परियोजना का एक हिस्सा थी जो भारतीय भषाओं में विज्ञान संचार के विश्लेषण पर केंद्रित है। बैठक का एजेंडा लोकप्रिय विज्ञान साहित्य और सभी आधिकारिक भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार के लिए समकालीन प्रमुख चुनौतियों के साथ–साथ विज्ञान संचार में प्रयासों और योगदान की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करने के लिए विभिन्न भाषाओं के विज्ञान संचार विशेषज्ञों को एक साथ लाना था। बैठक के परिणाम के रूप में कई मूल्यवान अनुशंसाएं प्राप्त हुईं।

डॉ. परमानंद बर्मन, वैज्ञानिक, सीएसआईआर–निस्पर ने आमंत्रित विशेषज्ञों के बीच चर्चा के लिए एक खुले सत्र का संचालन किया। डॉ. मेहेर वान, वैज्ञानिक, सीएसआईआर–निस्पर ने बैठक के अंत में विशेषज्ञों और सभी संबंधितों को धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

8वें आईआईएसएफ में विज्ञानिका का सफल अयोजन

विज्ञान संचार, विज्ञान को समाज से जोड़ता है:
डॉ. एन. कलैसेल्वी, सीएसआईआर की महानिदेशक

विज्ञान संचारकों के बीच मानवता की भावना समय की जरूरत है- डॉ. संतोष चौबे , आरएनटीयू के कुलाधिपति

सीएसआईआर–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–निस्पर) ने भोपाल में 8वें भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) – ***''विज्ञानिका–विज्ञान साहित्य महोत्सव''*** का एक और सफल संस्करण आयोजित किया। इससे पहले यह चेन्नै, लखनऊ, कोलकाता, नई दिल्ली और गोवा में आयोजित किया गया था।

विज्ञानिका कार्यक्रम विज्ञान और समाज के बीच एक सेतु की तरह काम करता है और यह आईआईएसएफ के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है। इसके भोपाल संस्करण में कई तरह के सत्रों का आयोजन किया गया। ये भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार, लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों के लेखकों, विज्ञान कवि सम्मेलन और प्रपत्र प्रस्तुतीकरण आदि पर केंद्रित थे। विज्ञानिका कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण विज्ञान नाटक, कठपुतली शो, मानसिकता (मेंटलिज्म) कार्यक्रम और चित्रकला प्रतियोगिता थी।

आईआईएसएफ के विज्ञानिका कार्यक्रम में लगभग 50 विशेषज्ञों और विज्ञान संचारकों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, छात्रों आदि सहित लगभग 250 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

सीएसआईआर की महानिदेशक और डीएसआईआर की सचिव डॉ. एन. कलैसेल्वी ने विज्ञानिका कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। उन्होंने आईआईएसएफ के एक मुख्य भाग के रूप में विज्ञानिका के पहले के 5 संस्करणों का सफलतापूर्वक आयोजन करने को लेकर सीएसआईआर–निस्पर की सराहना की। डॉ. कलैसेल्वी ने कहा कि विज्ञान संचार, विज्ञान को समाज से जोड़ता है। इसके बाद विज्ञान भारती के अध्यक्ष और सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक डॉ. शेखर सी. मांडे ने समाधान खोजने के लिए विघटनकारी विज्ञान पर काम करने की जरूरत पर एक प्रमुख भाषण दिया।

इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भोपाल स्थित भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय तिवारी ने विज्ञान संचार के महत्व पर अपना संदेश देने के साथ सीएसआईआर–निस्पर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं की भी सराहना की। इसके अलावा गणमान्य व्यक्तियों ने विज्ञानिका थीम बुक और विज्ञान कविताओं के संग्रह पर एक पुस्तक (समकालीन हिंदी विज्ञान कविता संचयन) का विमोचन किया। वहीं, विज्ञानिका के उद्घाटन सत्र के संचालन की जिम्मेदारी शुभदा कपिल ने निभाईं।

विज्ञानिका कार्यक्रम के पहले सत्र में क्षेत्रीय विज्ञान संचार के महत्व, इसकी स्थिति, चुनौतियों और कार्यक्षेत्र पर आकर्षक चर्चा हुई। इस चर्चा में तमिल, कन्नड़, मराठी, बंगाली, उर्दू और हिंदी में क्षेत्रीय विज्ञान संचारक शामिल थे। इस सत्र का संचालन विज्ञान प्रसार के वैज्ञानिक डॉ. टी. वी. वेंकटेश्वरन ने किया।

इसके पहले दिन विद्यालय के बच्चों के लिए भी एक सत्र आयोजित किया गया। इसमें भोपाल पब्लिक स्कूल के लगभग 100 छात्रों ने भाग लिया। इस सत्र में एक मेंटलिज्म शो, एक विज्ञान कठपुतली शो और ''इंडिया@100– मेरा देश, मेरी सोच'' विषयवस्तु पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इसे लेकर छात्र उत्सुक थे और वे पूरे मन से इन सभी सत्रों में शामिल हुए।

इस कार्यक्रम में दो वैज्ञानिक सत्र आयोजित किए गए। इनमें विज्ञान संचार अनुसंधान और नई पहलों पर 17 पेपर प्रस्तुत किए गए। इन सत्रों की अध्यक्षता भोपाल स्थित राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सुनील कुमार गुप्ता और रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल स्थित विज्ञान संचार केंद्र के प्रमुख श्री प्रबल रॉय ने की। वहीं, इनकी सह–अध्यक्षता भोपाल स्थित क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. साकेत सिंह कौरव, भोपाल स्थित सीएसआईआर–एएमपीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जे.पी. शुक्ला और इंदौर के न्यूरोसर्जन व विज्ञान संचारक डॉ. अपूर्व पुराणिक ने की।

पहले दिन शाम के सत्र में एक विज्ञान नाटक ***''गैलीलियो''*** प्रदर्शित किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में दर्शक उपस्थित थे। इस नाटक में इटली के खगोलशास्त्री व गणितज्ञ गैलीलियो के जीवन और संघर्ष को थिएटर ग्रुप ने प्रदर्शित किया। इस नाटक का स्पष्ट संदेश– ***'समाज के विकास के लिए वैज्ञानिक जागरूकता जरूरी है'*** था। भोपाल स्थित शैडो कल्चरल और सोशल वेलफेयर सोसायटी ने इस नाटक का मंचन किया था। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, टीवी व रंगमंच के कलाकार और कवि नीलेश मालवीय ने गैलीलियो नाटक को प्रस्तुत किया। वहीं, सीएसआईआर–निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे और सीएसआईआर–निस्पर की पीएचडी स्कॉलर श्वेता श्रीवास्त्री ने इस नाटक सत्र का संचालन किया।

दूसरे दिन की शुरुआत ***"लेखकों से मिलें"*** सत्र के साथ हुई। इन लेखकों में जेनेवा के सर्न (SERN) से डॉ. अर्चना शर्मा, डॉ. पी. ए. सबरीश, पंकज चतुर्वेदी, स्वाति तिवारी, प्रमोद भार्गव, अमित कुमार, निरंजन देव भारद्वाज और डॉ. मेहेर वान जैसे विज्ञान लेखक शामिल थे। इस सत्र का संचालन विज्ञान संचारक और विज्ञान फोटो पत्रकार श्री पल्लव बागला ने किया। इस सत्र के लेखकों ने अपनी पुस्तकों के प्रमुख बिंदुओं और प्रमुख अंशों पर चर्चा की।

इसके बाद विज्ञान कवि सम्मेलन सत्र आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता भोपाल स्थित रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलप.ति डॉ. संतोष चौबे ने की और सह–अध्यक्षता प्रसिद्ध टीवी अभिनेता व कवि श्री नीलेश मालवीय ने की। इस सत्र को 300 से अधिक दर्शकों की क्षमता वाले सभागार में आयोजित किया गया था। इस सत्र के प्रमुख कवियों में डॉ. शुभ्रता मिश्रा, सारिका घारू, शुचि मिश्रा, सुधीर सक्सेना, विशाल मुलिया, मोहन सगोरिया, ओम प्रकाश यादव,डॉ. दिनेश चमोला और पंकज प्रसून थे। इसके संचालन की जिम्मेदारी राधा गुप्ता ने निभाई।

इस कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता भोपाल स्थित रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. संतोष चौबे ने की। वहीं, भोपाल स्थित माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.जी. सुरेश और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए) के विज्ञान संचार कार्यक्रम सलाहकार डॉ. सी. एम. नौटियाल इस कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि थे। सीएसआईआर–निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक श्री हसन जावेद खान ने अतिथियों का स्वागत किया और सीएसआईआर–निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने विज्ञानिका के पूरे कार्यक्रम के मुख्य बिंदुओं की जानकारी दी।

डॉ. संतोष चौबे ने कहा कि विज्ञान संचारकों में मानवीय भावनाओं और लेखकों में वैज्ञानिक सोच व प्रवृत्ति की जरूरत है।

वहीं, प्रोफेसर के.जी. सुरेश ने कैंसर और जलवायु परिवर्तन जैसी मानवता के सामने मौजूद चुनौतियों का उल्लेख किया। उन्होंने आगे इन चुनौतियों के समाधान के लिए आम नागरिकों द्वारा विज्ञान संचार को अपनाने और तर्कसंगत सोच को अपनाने पर जोर दिया। वहीं, नई दिल्ली स्थित जेएनयू के स्कूल ऑफ बायौटेक्नोलॉजी में एसोसिएट प्रोफेसर बी.एस. बालाजी ने 'दिव्यांगों के लिए *शैक्षणिक उपकरण–एक नई शुरुआत का संकल्प*' पर व्याख्यान दिया।

विज्ञानिका के सभी सत्रों में बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस कार्यक्रम को प्रेस और दूरदर्शन में भी कवर किया गया। सीएसआईआर–निस्पर की टीम ने विज्ञान भारती के समन्वयकों और रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय व सीएसआईआर–एम्प्रो के स्वयंसेवकों के साथ एक उत्कृष्ट काम किया।

इसके अलावा मध्य प्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) से इस आयोजन को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने में सहायता प्राप्त हुई।

विज्ञानिका कार्यक्रम को भोपाल स्थित मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एमएएनआईटी) के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के सभागार में आयोजित किया।

इसके अलावा आईआईएसएफ–भोपाल में सीएसआईआर–निस्पर ने मेगा साइन्स एक्सपो पवेलियन में अपनी लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं, पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी प्रदर्शन किया।

सीएसआईआर–निस्पर के इस स्टॉल पर हजारों की संख्या में विज्ञान प्रेमी पहुंचे थे।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर)
डॉ. के. एस. कृश्णन मार्ग, पूसा, नई दिल्ली.110012

हिन्दी मास समारोह

हिंदी में विभिन्न प्रकार के प्रशासनिक कार्य करने वाले कार्मिकों को 'राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार'

क्रम संख्या	अधिकारी/कर्मचारी का नाम और पद	प्रोत्साहन पुरस्कार धनराशि
1	श्री प्रशांत कुमार श्रीवास्तव, सहा. अनुभाग अधिकारी	5000/-
2	श्रीमती राजो देवी, सहायक अनुभाग अधिकारी	5000/-
3	श्री प्रांजल धर द्विवेदी, सहा. अनुभाग अधिकारी	3000/-
4	श्री दिनेश कुमार, कनि. सचिवालय सहायक	3000/-
5	श्रीमती भावना ठाकुर, अनुभाग अधिकारी (भर्ती/मूल्यां.)	3000/-
6	श्री राकेश कुमार नागरवाल, वरि. तकनीशियन (2)	2000/-
7	श्री मोहन लाल, निजी सचिव (वित्त एवं लेखा नियंत्रक)	2000/-
8	श्री महेन्द्र सिंह रावत, सहा. अनुभाग अधिकारी	2000/-
9	श्री प्रीतेश कुमार, सहायक अनुभाग अधिकारी	2000/-
10	श्री तिलक राज, अनुभाग अधिकारी (वित्त/लेखा)	2000/-

हिंदी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) के द्वारा सरकारी कार्य कराने वाले अधिकारी को 'राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार'

1	श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक	5000/-

वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्य हिंदी में करने हेतु 'विशिष्ट प्रोत्साहन पुरस्कार'

1	डॉ. मनीष मोहन गोरे, वैज्ञानिक	3000/-
2	डॉ. मेहेर वान, वैज्ञानिक	3000/-
3	श्री अभय कुमार मिश्रा, तकनीकी सहायक	3000/-
4	श्री चाँद मुहम्मद, तकनीकी सहायक	3000/-

कंप्यूटर पर हिंदी में टंकण प्रतियोगिता

1	श्री प्रांजल धर द्विवेदी, सहा. अनुभाग अधिकारी	2000/-
2	श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, अनुभाग अधिकारी	1500/-
3	श्री मोहन लाल, निजी सचिव	1000/-
4	श्री कैलाश चन्द परेवा, अनुभाग अधिकारी	500/-
5	सुश्री स्वर्णलता उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी	500/-

सामान्य ज्ञान/अंग्रेजी-हिंदी शब्दावली प्रतियोगिता		
1	श्री प्रीतेश कुमार, सहा. अनुभाग अधिकारी	2000/-
2	डॉ. कनिका मलिक, वरि. प्रधान वैज्ञानिक	1500/-
3	सुश्री स्वर्णलता उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी	1000/-
4	श्री अरुण उनियाल, तकनीकी अधिकारी	500/-
5	डॉ. मनीष मोहन गोरे, वैज्ञानिक	500/-

हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता		
1	डॉ. चारू लता, वरिष्ठ वैज्ञानिक	2000/-
2	डॉ. कनिका मलिक, वरि. प्रधान वैज्ञानिक	1500/-
3	श्रीमती शुभदा कपिल, तकनीकी सहायक	1000/-
4	श्री मोहन लाल, निजी सचिव	500/-
5	सुश्री नियति सिंह, परियोजना सहायक	500/-

कविता पाठ प्रतियोगिता		
1	श्री प्रांजल धर द्विवेदी, सहा. अनुभाग अधिकारी	2000/-
2	सुश्री मोनालिसा पाल, परियोजना सहायक	1500/-
3	श्रीमती राजो देवी, सहा. अनुभाग अधिकारी	1000/-
4	डॉ. कनिका मलिक, वरि. प्रधान वैज्ञानिक	500/-
5	श्री मनदीप सिंह, वरि. तकनीकी अधिकारी	500/-

हिंदी में पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता		
1	श्रीमती भावना ठाकुर, अनुभाग अधिकारी	2000/-
2	श्री नितिन बयाल, परियोजना सहायक	1500/-

चित्रलेखन प्रतियोगिता		
1	श्री महेश कुमार, परियोजना सहायक	2000/-
2	श्री मोहन लाल, निजी सचिव	1500/-
3	श्रीमती भावना ठाकुर, अनुभाग अधिकारी	1000/-
4	सुश्री वसुंधरा भारद्वाज, परियोजना सहायक	500/-
5	श्री प्रीतेश कुमार, सहा. अनुभाग अधिकारी	500/-

हिन्दी माह
प्रतियोगिताएं
एवं
पुरस्कार वितरण

ISSN 2456-9275

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर)

सीएसआईआर CSIR भारत का नवाचार इंजन *The Innovation Engine of India*

National Institute of Science Communication and Policy Research NIScPR सीएसआईआर-निस्पर

सीएसआईआर-निस्पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार, नीति अनुसंधान तथा विज्ञान संचार हेतु विश्व स्तर का एक प्रतिष्ठित संसाधन केंद्र है। हमारा लक्ष्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार, नीति अध्ययनों को बढ़ावा देने सहित विविध हितधारकों के बीच विज्ञान संचार करना तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्योग और समाज के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना है।

अनुसंधान पत्रिकाएं

लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएं एवं आर एंड डी न्यूज़लेटर

प्रतिष्ठित प्रकाशन

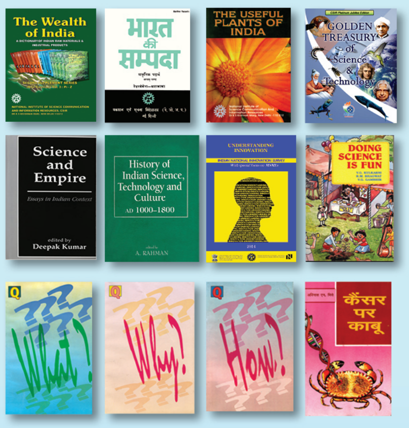

नवीन पहल

- यूबीए और विभा के साथ ग्रामीण आजीविका सृजन
- टीआरएल आकलन
- वैज्ञानिक रूप से मान्य SVASTIK सामाजिक पारंपरिक ज्ञान
- किसान सभा ऐप KISAN SABHA
- आरोग्यपथ ऐप AAROGYA PATH
- आरएचएमडी : पौधों का प्रमाणीकरण

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

प्रमुख, व्यवसाय विकास समूह एवं उद्योग
सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर)
डॉ. के. एस. कृष्णन मार्ग, पूसा, नई दिल्ली-110 012 एवं
14, सत्संग विहार मार्ग, नई दिल्ली-110 067

ई मेल: sales@niscpr.res.in; psmsupport@niscpr.res.in
दूरभाष: +91-11-25841647, 25843359
EPABX: +91-011-25846304-07, Ext. 287, 288, 289

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), विज्ञान संचार भवन, डॉ. के एस कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली द्वारा अभिकल्पित एवं मुद्रित